सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-32 अंक-21 7 से 21 नवम्बर, 2017 मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

महान नवंबर क्रांति जिन्दाबाद

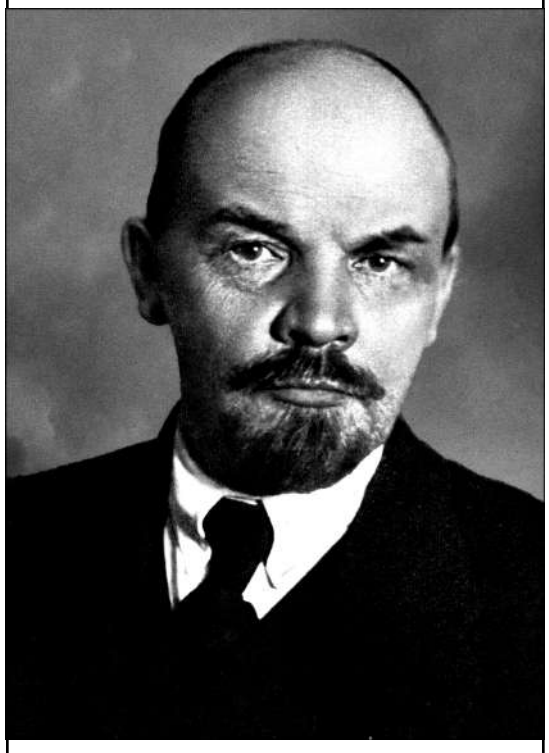

''क्रान्ति का बुनियादी नियम, जिसे सब क्रान्तियों ने और खासकर बीसवीं सदी में होने वाली रूस की तीनों क्रान्तियों ने सही साबित कर दिया, वह है: क्रान्ति के लिए इतना ही काफी नहीं है कि शोषित और उत्पीड़ित जनता पुराने ढंग से रहना असम्भव समझने लगे और परिवर्तन की माँग करने लगे; क्रान्ति के लिए आवश्यक है कि शोषकों के लिए भी पुराने ढंग से रहना और शासन करना असम्भव हो जाए। जब ''नीचे के वर्ग'' पुराना ढंग नहीं चाहते और जब ''ऊपर के वर्ग'' पुराना ढंग नहीं चला सकते–केवल उसी समय क्रान्ति की विजय हो सकती है।''– **लेनिन**

(वामपंथी कम्युनिज़्म-एक बचकाना मर्ज़)

''पूंजीवादी संसदीय और बहुत हद तक पूंजीवादी सांविधानिक देशों का समूचा इतिहास यह प्रकट कर रहा है कि मंत्रियों की अदला-बदली का कोई खास अर्थ नहीं होता, क्योंकि प्रशासन का वास्तविक काम अधिकारियों की विशाल फौज के हाथों में होता है। इस फौज में जनवाद-विरोधी भावना पूर्णत: ओत-प्रोत होती है। वह जमींदारों और पूंजीपति वर्ग के साथ लाखों-करोड़ों सूत्रों में बंधी और हर रूप में उन वर्गों पर अवलम्बित होती है, यह फौज पूंजीवादी संबंधों के वातावरण से घिरी होती है और केवल उसी वातावरण में सांस लेती है। वह लोचहीन, संकुचित-दृष्टि, अनुभूतिशून्य होती है, वह उक्त वातावरण से भाग नहीं सकती और सिर्फ पुराने तरीके से ही सोच, समझ और काम कर सकती है।'' – **लेनिन** *(क्रान्ति का बुनियादी सवाल)*

महान नवंबर क्रांति से सीख लेकर भारतीय पूंजीवाद को उखाड़ फेंकें

कॉमरेड धुर्जटी दास

पटना (बिहार) : 10 अक्तूबर को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बिहार राज्य कमिटी के तत्वावधान में 'महान नवम्बर क्रांति शताब्दी समारोह' आयोजित किया गया। इसमें पार्टी के ओडिशा राज्य कमिटी के सचिव तथा केन्द्रीय स्टाफ सदस्य व समारोह के मुख्य वक्ता कॉ. धुर्जटी दास का संक्षिप्त वक्तव्य नीचे दिया गया है।

कॉ. अध्यक्ष जी, पार्टी के राज्य कमिटी सदस्यगण और हॉल में उपस्थित कॉमरेड्स,

मेरी तबीयत खराब होने के कारण बैठकर बोलना पड़ रहा है। इसके लिए मुझे माफ करेंगे। साथियों, देश की आजादी के 70 साल हो गए, लेकिन देश में लोगों

(शेष पृष्ठ 3 पर)

पटना में जुलूस निकालते हुए एसयूसीआई(सी) कार्यकर्ता

समाजवादी सोवियत संघ और किसानों की खुशहाली

'रूस से पत्र' नामक अपनी विख्यात कृति में महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर लिखते हैं, "युग-युगान्तर से सभ्य समाज में अनेक गुमनाम समुदायों का समावेश रहा है। वे ही लद्दू जानवरों की तरह संख्या में सबसे ज्यादा हैं। उन्हें मनुष्य बनने की फुरसत ही नहीं है। उनके हिस्से आती है समाज की सम्पत्ति की मात्र खुरचन जिस पर वे पलते हैं। सबसे कम भोजन, सबसे कम कपड़े व सबसे कम शिक्षा पा कर भी वे सेवा सभी की करते हैं। कड़ी मेहनत करने पर भी उन्हीं का सबसे ज्यादा अपमान होता है। भूख हमेशा उन्हें सहन करनी पड़ती है, फिर ऊपर वालों की लातें खाते हैं– जीवन यापन की सभी सुविधाओं से वे वंचित रहते हैं। दीप स्तम्भ की तरह वे सिर पर सभ्यता का दीपक लिए खड़े रहते हैं;–ऊपर वालों को सबको रौशनी मिलती है जबकि खुद वे रिसते हुए तेल से सने होते हैं।

मैंने उनके बारे में प्राय बहुत सोचा है परन्तु इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इसका कोई समाधान नजर नहीं आया। अगर एक समूह नीचे नहीं रहेगा तो कोई ऊपर कैसे रह सकता है और कोई तो ऊपर रहेगा ही। ... परन्तु यह मान लेने से कि अधिकांश मनुष्यों को नीचे रखकर और मानवसुलभ अधिकारों से भी उन्हें वंचित रख कर ही सभ्यता ऊंची रह सकती है, हमारा मन धिक्कारों से भर जाता है।'' (मास्को 20 सितम्बर, 1930)

क्यों लोग पीड़ित हैं, क्यों उन्हें जीवन की जरूरतों से वंचित रखा हुआ है, सबसे ज्यादा काम करने पर भी क्यों उन्हें कुछ भी नहीं मिलता, क्यों इन लद्दू जानवरों को मनुष्य बनने की कोई फुरसत नहीं है–कवि टैगोर के पास इन सवालों के जवाब नहीं थे। न केवल टैगोर बल्कि उन जैसे मावनतावादी महापुरुष इस स्थिति में नहीं थे कि इन प्रश्नों का वे जवाब दे पाते। मेहनतकश लोगों के प्रति सहानुभूति की भावना से वे सोचा करते थे कि इनके जीवन की स्थिति में सुधार लाने के लिए अधिकतम कुछ किया जाना चाहिए।

यह कार्ल मार्क्स थे जिन्होंने पहली बार इतिहास में इन सवालों के जवाब दिये। उन्होंने बताया कि मेहनतकश लोगों की दुर्दशा और अन्य समस्याओं का कारण वर्ग-शोषण है। वर्तमान में पूँजीवादी समाज में उत्पादन का चरित्र सामाजिक है लेकिन इसका मालिकाना प्राइवेट हाथों में है। इस पूँजीवादी समाज में यह परस्पर एक अन्तरविरोध है। इसलिए मजदूर वर्ग के लोगों को वर्ग-उत्पीड़न और वर्ग-शोषण से छुटकारा पाने के लिए पूँजीवाद का खात्मा करना चाहिए और सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व अर्थात् समाजवाद कायम करना चाहिए। लेकिन पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना आसान नहीं है। इसके लिए सर्वहारा को वैज्ञानिक समाजवाद के हथियार से खुद को सुसज्जित करना चाहिए, इसके अनुरूप खुद को बदलना चाहिए, अपना राजनैतिक संगठन बनाना चाहिए और पूरे मेहनतकश-वर्ग को प्रेरित कर क्रान्ति के मार्ग पर लाना चाहिए। मार्क्स ने जो कहा वह यह है, "मजदूर अगर दुनिया को बदलना चाहते हैं तो पहले अपने आपको बदलना होगा।" मार्क्स का अनुसरण करते हुए सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड लेनिन ने 7 नवम्बर 1917 को रूस में समाजवाद कायम किया था जिसे हम महान नवम्बर क्रान्ति कहते हैं।

अतीत की क्रान्तियों से नवम्बर क्रान्ति भिन्न थी। इसने ऐसा नहीं किया था कि एक शोषक वर्ग को हटा कर उसके स्थान पर किसी दूसरे शोषक वर्ग को बिठा दिया गया हो। बल्कि इसका उद्देश्य उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करके सभी प्रकार के शोषण का अन्त

(शेष पृष्ठ 2 पर)

समाजवादी सोवियत संघ और किसान..

(पृष्ठ 1 का शेष)

करना था। इसके परिणामस्वरूप सोवियत समाज से दुख, गरीबी, अनपढ़ता, बेरोजगारी और वेश्यावृत्ति को समाप्त करने में सोवियत समाजवाद सक्षम हुआ था। इसने दुनिया में एक नयी प्रकार की सभ्यता का निर्माण किया था। इस क्रान्ति का लाभ रूस के लाखों-लाख किसानों को भी मिला था।

कवि रवीन्द्रनाथ ने अपने 'रूस से पत्र' में लिखा था कि "अपने देश के किसान-मजदूरों की याद उठ आई थी। यह 'अलिफ-लैला' के जादूगर की करामात-सी लगती थी। दस ही वर्ष पहले ये लोग हमारे देश के मजदूरों की तरह निरक्षर, असहाय और भूखे थे। वे हमारी ही तरह अंध-विश्वासी व धर्ममूढ़ थे। दुख में और आफत-विपत्ति में पड़ने पर देवताओं के द्वार पर अपने सिर पटकते थे। परलोक के भय से पंडे-पुरोहितों के हाथ में और इहलोक के भय से राजा, साहूकार और जमींदारों के हाथ में अपनी बुद्धि को बन्धक रखे हुए थे। जो इन्हें जूतों से लात मारते थे, उन्हीं के जूते साफ करना इनका काम था। हजारों साल से इनकी प्रथाओं में कोई बदलाव नहीं हुआ था। छकड़े, चरखे और कोल्हू–सब बाबा आदम के जमाने के थे। इनमें बदलाव के लिए कहने पर वे बिगड़ खड़े होते थे। हमारे देश के 30 करोड़ लोगों की पीठ पर जिस तरह से भूतकाल का भूत सवार है, उसने जैसे इनकी आंखे मींच रखी हैं –इन लोगों का भी ठीक वैसा ही हाल था। इन्हीं कुछ वर्षों में इन्होंने उस मूढ़ता और अक्षमता का पहाड़ जिस तरह से हिला दिया है, उसे देख कर मुझ समेत अभागे भारतवासियों को जितना आश्चर्य हुआ है, उतना और किसे होगा बताओ।'' (मॉस्को, 28.09.1930)

''मास्को में जब मैं एक कृषि भवन देखने गया था, मैंने देखा कि यह एक क्लब-सी है। इस तरह की संस्थाएं रूस के समस्त छोटे-बड़े शहरों और गाँवों में हैं। इन सब स्थानों पर कृषि-विद्या, समाज-विज्ञान आदि विषयों के बारे में चर्चा की जाती हैं और जो अनपढ़ है उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। किसानों को वैज्ञानिक ढंग से खेती करने की शिक्षा देने के लिए विशेष कक्षा लगाई जाती हैं। प्रत्येक भवन में प्राकृतिक व सामाजिक – सब तरह के शिक्षणीय विषयों के संग्रहालय हैं। इसके अलावा इनमें किसानों को और भी सब तरह की उपयोगी सलाह-मशवरा दिये जाने की व्यवस्था है।

किसान जब किसी काम से गांव से शहर आते हैं, तो बहुत कम खर्च में अधिक से अधिक तीन सप्ताह तक इस तरह के भवनों में रह सकते हैं। इन विस्तारित संस्थाओं के माध्यम से सोवियत सत्ता ने एक समय अनपढ़ रहे किसानों के दिलो-दिमाग में नई जागृति लाकर समाजव्यापी नया जीवन ला देने की प्रशंसनीय नींव डाल दी है।''(01.10.1930)

परन्तु नवम्बर क्रान्ति से पहले रूस के किसानों की हालत कैसी थी? लेनिन लिखते हैं, ''भूदास प्रथा के जमाने में किसान सामन्त की आज्ञा के बिना शादी भी नहीं कर सकता था।... भूदास प्रथा के जमाने में किसानों को अपने जमींदार के लिए बेगार (बिना मजदूरी पाये काम करना) करनी पड़ती थी। कितने दिन बेगार करनी होगी, यह जमींदार का कारिन्दा निश्चित करता था। ...भूदास प्रथा के समयं किसान जमींदार की आज्ञा के बिना गांव को नहीं छोड़ सकता था। ...जमींदार की आज्ञा के बिना किसान को जायदाद खरीदने का अधिकार नहीं था। वह खेत को नहीं खरीद सकता था। ...भूदास प्रथा में जमींदार किसान को कोड़े मरवा सकता था।... भूदास प्रथा के समय किसानों को किसी तरह के नागरिक अधिकार नहीं थे।'' इस पृष्ठभूमि में लेनिन ने आगे लिखा था, "करोड़ों-करोड़ लोग गरीबी व भुखमरी में रहने के लिए मजबूर हैं। ... जब तक कि जमीन का विशाल हिस्सा सिर्फ कुछ हजार अमीर परिवारों के मालिकाने में रहेगा, तब तक लाखों करोड़ों लोगों कों गरीबी व भुखमरी में ही जीवन बीताना पड़ेगा।... जब तक गांव के गरीब लोग जमींदारों के खिलाफ अडिग व निडर संघर्ष चलाने के लिए एक वर्ग के रूप में संगठित नहीं हो जाते, तब तक कहीं से किसी तरह की मदद की आशा रखना व्यर्थ है।'' (सं, र, खण्ड 6, अंग्रेजी संस्करण, पृष्ठ 377)

नवम्बर क्रान्ति से पहले रूस में भूस्वामित्व की क्या स्थिति थी? ''सोलह हजार परिवार ऐसे थे जिनके पास प्रति परिवार एक हजार देसियातिन (भूमि का माप जो 2.7 एकड़ के बराबर होता है) से भी ज्यादा भूमि का मालिकाना है और उनके मालिकाने में कुल 6 करोड़ 50 लाख देतियातिन भूमि है। कितनी विशाल भूमि बड़े-बड़े जमींदारों के हाथों में जमा है, यह इस तथ्य से भी पता चलता है कि एक हजार से भी कम (924) परिवार ऐसे हैं जिनके पास प्रति परिवार दस हजार देसियातिन से ज्यादा जमीन का मालिकना है। कुल मिलाकर उनके पास 2 करोड़ 70 लाख देसियातिन भूमि है। एक हजार परिवारों के पास इतनी भूमि है, जितनी कि 20 लाख किसान परिवारों के पास है।''

रूसी भूमि स्वामित्व की इस नई परिघटना को इंगित करते हुए लेनिन ने कहा था, "आज रुपये-पैसे का, पूँजी का राज है। व्यापारियों और समृद्ध किसानों ने बहुत बड़ी मात्रा में भूमि खरीद ली है।"(वही, पृ. 378)

अत:, क्रान्ति से पहले रूस में तरह-तरह के किसान थे। कुछ किसान गरीबी और भुखमरी में रहते थे और ऐसे भी थे जो अमीर बनते जाते थे। हरेक गांव में, हरेक पंचायत में बहुत सारे खेतमजदूर थे, बहुत से कंगाल किसान थे और उनके साथ-साथ धनी किसान भी थे जो खेतमजदूरों से काम करवाते थे और भूमि खरीदते थे। धनी किसान केवल स्थायी रूप से भूमि खरीदते ही नहीं थे बल्कि कई वर्षों के लिए प्राय: वे जमीन पट्टे पर ले लेते थे और बड़े भूखण्ड बेतहाशा महंगे किराये पर दे देते थे। इस तरह वे ग्रामीण गरीबों को जमीन से वंचित कर देते थे। यह पता चला है कि धनी किसान कुल जोत के पांचवें अर्थात् 20 प्रतिशत हिस्से के बराबर थे, जबकि किराये पर दी गयी जमीन का तीन चौथाई (75 प्रतिशत) भाग उन्होंने हथिया लिया था। सब जगह जमीन उन्हीं के हाथ में जाती थी, जिनके पास धन था। गरीब किसान लाचारी में अपनी जोत की भूमि या रकबा छोड़ने के लिए मजबूर थे क्योंकि उनके पास न पशु थे, न बीज, ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे जमीन जोत सकें।

रूस में गरीब किसान ही सबसे ज्यादा संख्या में थे। वे रूस के कुल किसानों के दो-तिहाई (66 प्रतिशत) के बराबर होते थे। जिस साल अकाल पड़ता था या फसल खराब हो जाती थी तो कई हजार खेत बर्बाद हो जाते थे। भूमि पर जीवन बसर करने वालों की संख्या बढ़ गयी थी। परन्तु सबसे अच्छी जमीनें जमींदारों या धनी किसानों ने हथियाई हुई थी। इन हालात में, हर साल ज्यादा से ज्यादा लोग तबाह हो जाते थे और शहर व फैक्टिरियों का रुख करते थे। घोर बदहाली, भयंकर गरीबी, हाड़तोड़ कठिन महनत-मशक्कत और कभी खत्म न होने वाली गुलामी से उनका जीना दूभर था। इसके अलावा शिक्षा और सभ्य समाज की सुविधाएं जैसे इलाज, मनोरंजन व अन्य चीजें प्राप्त करना उनके नसीब में नहीं था।

रूस में कृषि की इतनी पिछड़ी हालत में समाजवाद का निर्माण करना आसान कार्य नहीं था क्योंकि समाजवाद एक सामाजिक अर्थ-व्यवस्था होती है जो उत्पादन के साधनों पर समाजवादी मालिकाने और सामूहिक श्रम के आधार पर उद्योग व कृषि दोनों का मिलान करती है।

परन्तु सत्ता पर मजदूर वर्ग की जीत होने के बाद कृषि का समाजवादी रूपान्तरण करना क्रान्ति का सबसे कठिन दायित्व होता है। जब तक कृषि के एक रूप के तौर पर व्यक्ति मालिकाने वाली खेतीबाड़ी की प्रबलता रहती है, तब तक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की मानसिकता कृषि में ज्यूँ की त्यूँ कायम रहती है। माल उत्पादन की प्रणाली किसान समुदाय को गरीबी व उत्पीड़न से बचाने में असमर्थ होती है। इसलिए लेनिन ने सहकारिता के माध्यम से व्यक्ति-मालिकाने वाली छोटे पैमाने की खेती को बड़े पैमाने की समाजवादी खेती में रूपांतरण की एक योजना बनाई थी। समाजवाद के निर्माण की आम योजना का यह एक अनिवार्य भाग थी।

कृषि-उत्पादन की सभी शाखाओं में वृद्धि की सबसे महत्वपूर्ण एक शर्त यह है कि कृषि में उत्पादन के मुख्य साधन के रूप में भूमि का भरपूर व सर्वोत्तम इस्तेमाल किया जाए। कृषि उपज के लागत खर्च को घटाने के लिए और सोवियत किसानों की आर्थिक स्थिति को निरन्तर उन्नत करने के लिए भूमि का सामूहिक स्वामित्व एक महत्वपूर्ण पहलू है।

क्रान्ति पूर्व रूस में गरीब व मध्यम किसानों के पास 33 करोड़ एकड़ कृषि भूमि थी। नवम्बर क्रान्ति और सामूहिक फार्म प्रणाली की विजय के परिणाम स्वरूप 1937 में सामूहिक फार्म के किसानों के उपयोग हेतु 91 करोड़ एकड़ से भी ज्यादा कृषि भूमि थी। राजकीय फार्मो के पास 17 करोड़ एकड़ कृषि भूमि थी।

सामूहिक फार्म में उत्पादन की सभी शाखाओं–अनाज उत्पादन में, तकनीकी विकास व पशुचारा उगाने में, सब्जी उत्पादन में और सामूहिक फार्मों में पशु-संवर्धन के कठिन कार्य में भी–जटिल मशीनीकरण करना इस समस्या के समाधान की सबसे महत्वपूर्ण शर्त थी। मशीन ट्रैक्टर स्टेशन (एमटीएस) और विशेषीकृत स्टेशनों पर कुशल कारीगरों, जैसे ट्रैक्टर ड्राइवरों, ट्रैक्टर टीम लीडर, कम्बाइन ऑपरेटरों तथा कृषि की अन्य जटिल मशीनों के आपरेटरों का एक नियमित दल तैयार किया गया था। इसने उपलब्ध जटिल कृषि मशीनरी की सम्पदा का भरपूर और सबसे बेहतरीन उत्पादनकारी इस्तेमाल सम्भव बना दिया था। परन्तु इससे सोवियत यूनियन के किसानों के जीवन में किस तरह के परिवर्तन हुए?

राज्य की देनदारी चुकाने और स्थायी सामाजिक कोष में अंशदान जमा करने के उपरान्त शेष उत्पादन और नकद आमदनी को सामूहिक फार्म द्वारा कार्य दिवस के हिसाब से सहकारी संघ के सदस्यों के बीच बांट दिया जाता था। सामूहिक फार्म के किसानों की आमदनी उनके कार्य दिवस के हिसाब से होती थी। इस पर किसी तरह का कोई टैक्स नहीं लगाया जाता था।

समाजीकृत क्षेत्र के सहकारी संघ से मिलने वाली सामूहिक फार्म के हर किसान की आमदनी की मात्रा दो बातों पर निर्भर करती थी : (1) पुरुष हो या नारी, किसी भी किसान के कार्य दिवसों की संख्या पर, (2) प्रति कार्य दिवस के मेहनताने (वेतन) की मात्रा पर। सालभर में किये गये कार्य दिवसों की संख्या का निर्धारण सामूहिक फार्म के प्रत्येक किसान द्वारा किये गये कार्य के आधार पर किया जाता था। एक दिन के मेहनताने की मात्रा अर्थात् सामूहिक फार्म के किसान को एक दिन के कार्य दिवस के बदले मिलने वाली उपज का हिस्सा व नकदी की मात्रा सामूहिक फार्म के सभी सदस्यों के कार्य पर निर्भर करता था। पूरा सामूहिक फार्म कुल मिला कर जितना बेहतर कार्य करता था, इसका समाजीकृत क्षेत्र भी उतनी ही सफलता के साथ विकसित होता जाता था। पूरे सामूहिक फार्म की कुल आमदनी भी उतनी ही ज्यादा हो जाती थी अर्थात् किये गये कार्य दिवस के आधार पर हरेक को बांटे जाने वाली आमदनी की मात्रा भी उतनी ही ज्यादा बढ़ जाती थी। राज्य के प्रति अपनी देनदारी का भुगतान करने और स्थायी सामाजिक कोष में अंशदान जमा करने के बाद सामूहिक फार्म की जो कुल आमदनी की मात्रा बच जाती थी, उसे भी कार्य-दिवस के हिसाब से भुगतान कर हरेक को बांट दिया जाता था। इसके अलावा उपरोक्त सामाजिक उपभोग कोष के माध्यम से समाजीकृत क्षेत्र से भी सामूहिक फार्म के किसानों की आमदनी बढ़ती थी। इन सब से सामूहिक फार्म के समाजीकृत क्षेत्र के विकास करने में प्रत्येक सामूहिक किसान में भौतिक रुचि पैदा होती थी।

कार्य के आधार पर बंटवारे के आर्थिक सिद्धान्त की जरूरतों की सुसंगत पूर्ति के लिए सामूहिक फार्मों में श्रम-आधारित मेहनताना देने की एक प्रणाली स्थापित की गयी थी जिसमें अपनी मेहनत द्वारा अधिक उत्पादन का परिणाम दर्शाने वाले सामूहिक किसान सापेक्ष रूप से कम उत्पादन परिणाम दर्शाने वाले किसानों से ज्यादा मेहनताना प्राप्त करते थे।

सामूहिक खेतों में फसल के उत्पादन और सामूहिक मालिकानाधीन पशुधन की उत्पादकता के बारे में टीमों और योजकों द्वारा निर्धारित योजना पूरी करने के लिए ज्यादा कार्य करने के ऐवज में वस्तु या नकद धन के रूप में अतिरिक्त मेहनताना देने का प्रावधान सामूहिक किसानों में उनके श्रम के फल में व्यक्तिगत रुचि बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन था।

उदाहरण के रूप में, खेत की टीमों में सामूहिक किसानों को कुछ अतिरिक्त धन राशि प्राप्त होती थी जो उस टीम के लिए निर्धारित कुल क्षेत्र में अनाज की फसलों की एक निश्चित मात्रा से ज्यादा की पूर्ति करने पर दी जाती थी। यह टीम द्वारा मात्रा से अधिक कटाई करने पर प्राप्त अनाज की चौथाई से लेकर आधी मात्रा के बराबर होती थी। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

समाजवादी सोवियत संघ और किसान...

(पृष्ठ 2 का शेष)

टीमों या योजकों द्वारा निर्धारित मात्रा से ज्यादा कृषि उत्पादन करने पर उनके खाते में अतिरिक्त कार्य दिवस जोड़ दिए जाते हैं और इस योजना को तयशुदा मात्रा से कम पूरा न करने की स्थिति में उनके कार्यदिवसों में कुछ कटौती करने का भी प्रचलन था।

सामूहिक पशुधन फार्म में काम करने वाले सामूहिक किसानों के श्रम का मेहनताना दूध की मात्रा, ऊन, पंख और नवजात पशुओं के पालन-पोषण, पशुओं के कुल वजन में वृद्धि पर निर्भर करता था।

कार्य दिवस के हिसाब से उनकी देय रकम के ऐवज में साल के दौरान समय-समय पर नकद या वस्तु के रूप में उन्हें अग्रिम भुगतान का चलन भी सामूहिक फार्म में काम करने वाले हर एक सामूहिक किसान को भौतिक रूप से प्रेरित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस तरह कार्यदिवस और सामूहिक फार्म की आमदनी के बंटवारे की पद्धति से सामूहिक फार्म के किसानों के व्यक्तिगत हितों और सामूहिक फार्म के सामाजिक हितों का मिलान सही ढंग से किया जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सत्ता द्वारा सामूहिक फार्म और सामूहिक किसानों के भौतिक लाभों में वृद्धि हेतु कृषि को और भी विकसित करने के लिए जो कदम उठाये जाते हैं, उससे श्रमिक वर्ग और सामूहिक फार्म के किसानों की एकता और भी ज्यादा मजबूत होती है। यह समाजवादी सत्ता की शक्ति का आधार है।

सामूहिक फार्म के निर्णायक महत्व वाले समाजीकृत क्षेत्र के अलावा कृषि के सहकारी क्षेत्र में सामूहिक फार्म के किसानों के रिहायशी मकानों के समीप ही एक पूरक व्यक्तिगत जोत भी होती थी। इस तरह से कृषि सहकारी क्षेत्र में सामाजिक व व्यक्तिगत का सही मिलान भी होता था जिसमें व्यक्तिगत सामूहिक के मातहत रहता था। सामूहिक फार्म में सामाजिक व व्यक्तिगत के सही मिलान के सिद्धान्त की कोई भी अवहेलना कृषि सहकारी संघ के मूलाधार और श्रमिक वर्ग व किसानों की मित्रता के लिए नुकसानदेह होती थी।

सामूहिक फार्म की नकद आमदनी सन् 1933 में 57 लाख रुबल (रूसी मुद्रा) से बढ़कर सन् 1940 में 2 करोड़ 7 लाख रुबल, सन् 1953 में 4 करोड़ 96 लाख रुबल और सन् 1954 में 6 करोड़ 33 लाख रुबल हो गयी थी। इसके अलावा सामूहिक फार्मों के किसान अपने घर के नजदीक के पूरक जोत (प्लाट) से नकद आमदनी प्राप्त करते थे। समाजीकृत क्षेत्र और व्यक्तिगत जोत से प्राप्त आमदनी से सामूहिक फार्मों के किसान वहां सरकारी व सहकारी दुकानों से निश्चित दाम पर गृहस्थ की जरूरी चीजें खरीदते थे। ये दाम भी क्रमशः घटते जाते थे।

सामूहिक फार्म प्रणाली के आधार पर सोवियत संघ में देहात का चेहरा ही बदल गया था। पुराने गांव अब नये गांव में बदल गये थे जहां सार्वजनिक भवन, बिजली घर, स्कूल, लायब्रेरियां, क्लब और शिशुशालाएं थी।

सोवियत किसान नये तरह का किसान बन गया था। उन्हें विज्ञान व संस्कृति के लाभ प्राप्त थे। सामूहिक फार्मों के भीतर से ही विभिन्न प्रकार के सोवियत बुद्धिजीवी- इन्जीनियर, डाक्टर, कृषि-विज्ञानी, पशुपालन कार्यकर्ता, शिक्षक तथा बड़े पैमाने के समाजवादी उत्पादन के संगठनकर्ता उभर कर आये थे। सामूहिक फार्म के कई किसान विकसित कृषि तकनीक के विशेषज्ञ और उच्च पैदावार देने वाली फसल लेने और उच्च उत्पादनकारी पशुपालन की कला में माहिर हो गए थे।

ये तथ्य दर्शाते हैं कि सोवियत संघ के देहात में व्यापक पैमाने पर सांस्कृतिक क्रान्ति हुई थी। ग्रामीण क्षेत्रों में 7 साल तक के प्राथमिक स्तर के बच्चे और 10 साल तक के माध्यमिक स्तर के बच्चे जो सन् 1914-15 में 61 लाख थे, सन् 1951-52 में बढ़कर 2 करोड़ 11 लाख हो गये थे। सन् 1952 में 2 करोड़ 90 लाख व्यक्ति देहात में पढ़ रहे थे जिनमें विभिन्न जन पेशों से सम्बन्धित शिक्षा के सभी तरह के रूपों, प्रशिक्षण, प्राथमिक व उच्च स्तर के बेशुम्मार प्रशिक्षु व विशेषज्ञ आदि शामिल थे। एक जनवरी 1955 को 2 लाख 75 हजार सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थायें जैसे लाइब्रेरी, क्लब व सिनेमाघर देहात में थी। सोवियत गांव में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य रूप से लागू होने के साथ-साथ 7 वर्षीय शिक्षा का दायित्व सफलतापूर्वक पूरा किया गया था।

राजकीय कृषि फार्म के हाथ में नकदी के रूप में जो कुल आमदनी रहती थी, वह कृषि फार्म को मजबूत व विस्तृत करने में और राजकीय फार्म के श्रमिकों की सांस्कृतिक व सामाजिक सुविधाओं के लिए ही खर्च होती थी। इनमें बाल-संस्थाएं, क्लब, विश्राम-घर और आरोग्य केन्द्र आदि शामिल थे। इसके लिए विशेष कोष बनाये गये थे, जैसे-राजकीय फार्म की अर्थव्यवस्था को मजबूत व विस्तृत करने हेतु कोष, बीमा-कोष, उद्यम-कोष आदि।

राजकीय फार्म में उत्पादन का विकास श्रमिक संगठन के समाजवादी रूप को मजबूत करने और किये गये कार्य के आधार पर भुगतान करने के सुसंगत समाजवादी सिद्धान्त को लागू करने पर बहुत हद तक निर्भर था।

कृषि में फसल उत्पादकता, पशुधन संवर्धन और फार्म के लाभांश में वृद्धि के सम्बंध में राज्य फार्म के श्रमिकों की भौतिक दिलचस्पी का सिद्धान्त प्रति वस्तु (संख्या/भार के हिसाब से) की दर (piece-rate) से नकद भुगतान की प्रणाली के माध्यम से लागू किया गया था। फसल की निर्धारित उपज से ज्यादा पैदावार करने, पशुधन संवर्धन-दूध वृद्धि, ऊन, नवजात पशुओं के पालन-पोषण का उच्च स्तर हासिल करने पर नकद बोनस दिया जाता था। कटाई की कम्बाइन मशीन के ऑपरेटर, सहायक, ट्रैक्टर ड्राइवर आदि नकद वेतन के अलावा वस्तु के रूप में भुगतान और अन्न भण्डार से भी चीजें प्राप्त करते थे। राजकीय फार्म के अग्रणी श्रमिकों और विशेषज्ञों को निर्धारित योजना से ज्यादा उत्पादन करने और राज्य को उपज की सप्लाई करने के लिए नकद बोनस देने की व्यवस्था थी।

कुल मिलाकर सम्पूर्ण राज्य और व्यक्ति-श्रमिकों को उनके श्रम के फलस्वरूप भौतिक रुचि होना ही वह सबसे महत्वपूर्ण शर्त है जिस पर राज्य फार्म के उत्पादन में सुधार व निर्बाध वृद्धि के साथ-साथ संयुक्त समाजवादी सोवियत संघ (USSR) की मेहनतकश जनता का कल्याण निर्भर करता है। ●●●

महान नवंबर क्रांति ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

के लिए भरपेट खाना नहीं, इलाज का इंतजाम नहीं, बच्चों को सही शिक्षा की व्यवस्था नहीं, 66 करोड़ लोगों को रोजगार नहीं। आपको मालूम है कि लेनिन के नेतृत्व में सन् 1917 में रूस में समाजवादी क्रांति हुई थी। छद्म मार्क्सवादियो से संघर्ष करते हुए लेनिन ने मजदूर वर्ग का राज कायम किया था। सन् 1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद महान स्तालिन ने समाजवादी समाज को खड़ा किया था। वहाँ सभी समस्याओं का हल, सभी लोगों का ख्याल रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था, इलाज की व्यवस्था, रोजगार का इंतजाम किया गया। दुनिया के जो मनीषी रूस में आये, वे ऐसे बदलावों को देखकर-सुनकर आश्चर्यचकित हुए थे।

आज हमारे देश में भाजपा के लोग भारतीय प्राचीन संस्कृति की बात कर रहे हैं। महिलाओं का असम्मान करना, उन्हें चुल्हा-चौके के दायरे में रखना क्या यही भारतीय प्राचीन संस्कृति है? क्या आज इसे हम अपनायेंगे? रूस में महिलाओं को ऐसी आजादी मिली थी की 2 बजे रात तक कहीं भी घूम-फिर सकती थीं। क्या आज पूंजीवादी व्यवस्था यह दे सकती है? नहीं। आज प्रचार किया जा रहा है कि कम्युनिस्ट देशद्रोही होते हैं। पूरी दुनिया में कम्युनिस्टों को बदनाम करने की कोशिश हो रही है। मैं कहना चाहता हूँ कि इन्हीं कम्युनिस्टों ने करोड़ों की संख्या में शहादत देकर रूस को हिटलर से सिर्फ बचाया ही नहीं था, बल्कि जर्मनी को जीत लेने के बाद वे चाहते तो जर्मनी पर कब्जा कर सकते थे लेकिन उन लोगों ने ऐसा नहीं किया। क्योंकि कम्युनिस्टों की ऐसी संस्कृति नहीं होती है। इस जीत ने दुनिया को एक नई रोशनी दी थीं। आज उत्तर कोरिया को भी बदनाम किया जा रहा है। उसे तानाशाह, निरंकुश कहा जा रहा है। लेकिन अमेरिका दुनिया में दादागिरी कर रहा है। उसने अफगानिस्तान, इराक, लिबिया आदि देशों को तबाह कर दिया। कमजोर देशों को कुचल रहा है। तब उसके खिलाफ कोई मीडिया नहीं बोलता है। सभी मीडिया चुप्पी साध लेते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि लेनिन के नेतृत्व में महान नवम्बर क्रांति ने बड़े स्पष्ट एवं जोरदार ढंग से सिद्ध कर दिखलाया था कि महान कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धांत कोई कपोल कल्पना नहीं है, बल्कि एक वास्तविकता है, दुनिया का भविष्य है। दुनिया भर के मेहनतकशों को पहली बार यह अहसास हुआ कि वास्तविक स्वतंत्रता, बराबरी व भाईचारे को धरती पर साकार करना संभव है। मार्क्स की यह भविष्यवाणी साकार हुई थी कि मजदूर वर्ग ही दुनिया को बदल सकता है बशर्ते कि पहले वह खुद को बदले। तब सर्वहारा एक अजेय ताकत बन जायेगा।

महान नवम्बर क्रांति द्वारा समाजवाद कायम करना केवल तभी संभव हो पाया, जब लेनिन ने क्रांति के बारे में सभी तरह के भ्रमों को दूर कर मार्क्सवाद की समझ को ठोस एवं सुस्पष्ट कर दिया। बहुत ही कम अरसे में

पटना: सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. धुर्जटी दास

रूस में युगों पुरानी व्याधियों, कंगाली, भूखमरी, बेरोजगारी, अज्ञानता, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति आदि का उन्मूलन कर दिया गया था।

उन्होंने आगे कहा कि मजदूर मांग उठाते हैं कि वेतन और मजदूरी बढ़ा दो। वे यह मांग नहीं करते कि हमें समाजवाद चाहिए। मजदूरों का राज चाहिए। मजदूर अपनी शक्ति और क्षमता पहचान नहीं पा रहे हैं। दुनिया का निर्माण मजदूर कर रहे हैं। पूंजीवाद की आयु तो मात्र 250-300 वर्षों की है। महान नवंबर क्रांति से शिक्षा लेकर भारतीय मजदूर वर्ग को शोषण पर आधारित पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना होगा। भारतीय जनजीवन अंधकार में डूबता जा रहा है। हर जगह लोग परिवर्तन के लिए छटपटा रहे हैं। स्वतःस्फूर्त आन्दोलनों का तूफान उठ रहा है। कमी है तो सिर्फ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतनधारा से लैस ताकतवर सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी की। इसे मजबूत करें और महान नवंबर क्रांति के संदेशों को गाँव-गाँव में फैला दें।

वहीं एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बिहार राज्य सचिव और समारोह के अध्यक्ष कॉमरेड अरूण कुमार सिंह ने कहा कि आने वाला भविष्य मजदूर वर्ग का है। हम सब मिलकर पार्टी की ताकत को मजबूत करने के संघर्ष में जुट जाएं।

इसके पूर्व शहीद-ए-आजम भगत सिंह चौक से एक सुसज्जित जुलूस निकाला गया जो नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति से होते हुए आईएमए हाल तक पहुँचा। जुलूस में सबसे आगे कार्ल मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से तुंग और कॉ. शिवदास घोष की तस्वीरें लगी थी। जुलूस काफी आकर्षक लग रहा था। जुलूस में लोग पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का नाश हो, महान नवंबर क्रांति जिंदाबाद, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतन जिंदाबाद जैसे नारे लगा रहे थे जिससे उनका जुझारू क्रांतिकारी तेवर चेहरे पर साफ-साफ दिख रहा था।

कार्ल मार्क्स
– महान दार्शनिक एवं विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के पथ प्रदर्शक

(गतांक से आगे)

लेनिन ने किया था मार्क्सवाद को विकसित एवं समृद्ध

आप में से कई इस बात से वाकिफ हैं कि मार्क्स जिन्होंने एंगेल्स के सहयोग से मजदूर वर्ग के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, 'इन्टरनेशनल वर्किंगमेन एसोसियेशन' की स्थापना की थी जो 'प्रथम इन्टरनेशनल' के तौर पर जाना जाता है। इसने 1872 तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। बाद में यह अपने लक्ष्य-उद्देश्य से भटक गया था और भंग कर दिया गया था। फिर, एंगेल्स की पहल पर 1889 में दूसरा इन्टरनेशनल स्थापित किया गया था। दूसरे इन्टरनेशनल ने एंगेल्स के जीवन काल में और उनकी मृम्यु के बाद भी काफी लम्बे अरसे तक मार्क्सवाद का परचम बुलंद रखा था। लेनिन दूसरे इन्टरनेशनल के अनुयायी के तौर पर रशियन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में शामिल हुए थे। लेकिन कुछ ही सालों के बाद, खास कर प्रथम विश्व युद्ध की पूर्व वेला में, लेनिन और दूसरे इन्टरनेशनल के नेताओं के बीच गंभीर मतभेद पैदा हो गए थे। गहन वैचारिक संघर्ष करते हुए लेनिन ने साबित किया कि दूसरे इण्टरनेशनल के नेता मार्क्सवाद के नाम पर संशोधनवाद पर अमल कर रहे थे। उस समय लेनिन को बुर्जुआ सिद्धांतकारों द्वारा मार्क्सवाद पर किये जा रहे हमलों और साथ ही साथ मार्क्सवाद को विकृत करने के लिए संशोधनवादियों द्वारा किये जा रहे कुत्सित प्रयासों के खिलाफ, दोनों के खिलाफ कठोर वैचारिक संघर्ष छेड़ा था। इसके अलावा, मार्क्स और एंगेल्स को साम्राज्यवाद की नई अवस्था नहीं देखनी पड़ी थी जो पूंजीवाद अपने चरम विकास के क्रम में हासिल कर चुका था। साम्राज्यवाद की इस अवस्था में मार्क्सवाद के सही प्रयोग और सर्वहारा क्रान्ति की रणनीति एवं रणकौशल के सम्बंध में लेनिन को मार्गदर्शन देना पड़ा था। इस संदर्भ में मैं लेनिन की प्रसिद्ध उक्ति को यहां दुहराना चाहूंगा। उन्होंने कहा था, *''हम किसी तरह मार्क्स के सिद्धान्त को अन्तिम और अनुलंघनीय जैसा कुछ नहीं मानते; हम यह यकीनन मानते हैं कि उन्होंने उस विज्ञान की मात्र आधारशिला रखी है जिसे समाजवादियों को अगर वक्त से पीछे नहीं रहना तो सभी दिशाओं में आगे बढ़ाना है।''* [24] **– *वी.आई. लेनिन*** *(सं. र., भाग 4, अं. सं., पृष्ठ 191-192)* लेनिन को कठमुल्लावादियों का मुकाबला करने के लिए यह कहना पड़ा था जो मार्क्स की कृतियों में पाये जाने वाले हर वाक्य को, हर शब्द को अनुलंघनीय मानते थे और साबित किया था कि मार्क्सवाद एक विज्ञान है और बदली हुई परिस्थिति में इसे रचनात्मक तौर पर लागू करना होता है। इस प्रक्रिया में मार्क्सवाद और भी विकसित और समृद्ध होगा। इसलिए ये लेनिन ही थे जिन्होंने मार्क्स-एंगेल्स के उत्तर काल में दर्शन, सिद्धान्त, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति एवं कला-साहित्य के साथ-साथ एक सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी के सांगठनिक सवालों पर और साम्राज्यवाद एवं सर्वहारा क्रान्ति के युग में रणनीति-रणकौशल के मामले में मार्क्सवाद की समझदारी को विकसित एवं समृद्ध करते हुए एक नई ऊँचाई पर पहुँचा दिया था। उसके लिए उनके सुयोग्य शिष्य महान स्तालिन ने सही ही कहा था, "लेनिनवाद साम्राज्यवाद तथा सर्वहारा क्रान्ति के युग का मार्क्सवाद है।"[25] नई विश्व परिस्थिति में जन्मी नयी समस्याओं और सवालों से जूझने के लिए मार्क्सवाद की सही समझदारी को विकसित करने और इसे लागू करने के लिए जरूरी है कि हम लेनिन की शिक्षाओं को आत्मसात करें। लेनिन के बाद क्रमवार स्तालिन, माओ त्से-तुंग और शिवदास घोष ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को उत्तरोत्तर विकसित एवं समृद्ध किया।

रूस की क्रान्ति और मार्क्सवाद के सृजनात्मक प्रयोग द्वारा समाजवाद की उन्नति

आप जानते हैं कि मार्क्सवाद के सृजनात्मक प्रयोग द्वारा लेनिन ने रूस में नवम्बर 1917 को समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न की थी और वर्ग शोषण से मुक्त पहला मजदूर वर्ग का राज्य कायम किया था। इस क्रान्ति के दौरान रूस यूरोप में एक बहुत पिछड़ा हुआ देश था। प्रथम विश्व युद्ध में यह उजाड़ दिया गया था और घोर अकाल से ग्रस्त था। बुर्जुआ प्रतिक्रान्तिकारियों ने गृह युद्ध छेड़ रखा था और साम्राज्यवादी ताकतों ने नवोदित समाजवादी देश की घेराबंदी कर रखी थी और उस पर एक अघोषित हमला किया हुआ था और आर्थिक प्रतिबंध लगा रखा था। ये सब उभरते हुए समाजवादी राज्य को खिलने से पहले ही खत्म करने के उद्देश्य से किया जा रहा था। ऐसी स्थिति में लेनिन के नेतृत्व में, स्तालिन एवं अन्य नेताओं, समूची बोल्शेविक पार्टी और रूस के मजदूर-किसानों ने एक जबरदस्त संघर्ष चलाया था और समाजवाद की रक्षा की थी। इस सब में उल्लेखनीय बात यह रही कि साम्राज्यवादी देशों के मजदूर भी रूसी क्रान्ति के पक्ष में आ खड़े हुए थे। लेनिन क्रान्ति के बाद मात्र 7 वर्ष जिन्दा रहे थे। उनकी मृत्यु के समय भी सोवियत संघ एक अत्यन्त पिछड़ा हुआ देश था और आर्थिक संकट से जूझ रहा था। दूसरी तरफ ट्रॉटस्की-जिनोवियेव-कामोनेव-बुखारिन की जुण्डली मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विकृत करने में मशगूल थी, वैचारिक भ्रान्तियाँ पैदा कर रहे थे और यहाँ तक कि दुश्मन खेमे वाले देश से सांठगांठ कर रहे थे ताकि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी एवं समाजवादी राज्य पर हमला बोल सकें। इस परिस्थिति में, लेनिन के योग्य उत्तराधिकारी स्तालिन ने इस जुण्डली को जनता से अलग-थलग करने और बेनकाब करने के लिए तीव्र वैचारिक संघर्ष चलाया था। इसके साथ-साथ उन्होंने आर्थिक पुनर्गठन का एक ऐतिहासिक संघर्ष छेड़ दिया था और सोवियत संघ को बहुत ही कम समय में एक शक्तिशाली समाजवादी देश में तब्दील करने के लिए अर्थव्यवस्था-राजनीति- विज्ञान-शिक्षा-संस्कृति-साहित्य आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास को गति प्रदान करने में अगुवाई की। पश्चिमी दुनिया में बुर्जुआ लोकतंत्र उस समय तक मन्दी में डूब चुका था और मानव सभ्यता को चौतरफा अंधकार में लपेट लिया था। उस मोड़ पर सर्वहारा लोकतंत्र का उदय एक युग की शुरूआत थी और 20वीं शताब्दी के मनीषियों को आनन्द तथा आत्म विश्वास से भर दिया था। रोमाँ रोलाँ, बर्नार्ड शॉ, आइंस्टीन यूरोप में और इसी तरह रवीन्द्रनाथ-शरत्चन्द्र-प्रेमचन्द-सुब्रमण्यम भारती-नजरूल आदि नवजागरण काल के चमकते सितारों के साथ-साथ नेताजी सुभाष-भगत सिंह सरीखे हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने इस समाजवादी सभ्यता का तहेदिल से स्वागत किया था और अपना पूरा सहयोग दिया था। सोवियत समाजवाद ने विभिन्न देशों के स्वतंत्रता संग्राम में सहायता प्रदान की थी। द्वितीय विश्व-युद्ध में जर्मनी-इटली-जापान की फासिस्ट धुरी से जब मानव सभ्यता काँप रही थी, तब सोवियत संघ, इसके साहसी लोग और लाल फौज ने स्तालिन के नेतृत्व में एक निर्णायक भूमिका अदा की थी और फासिस्ट शक्तियों को मुँह की खानी पड़ी थी। यह उनको भी स्वीकार करना पड़ा जो लोग सोवियत समाजवाद के धुर विरोधी थे। यह भी सबको स्वीकार करना पड़ा कि सोवियत संघ ने उस समय साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा दी जा रही युद्ध की धमकियों के खिलाफ शान्ति के गढ़ के रूप में काम किया था। आप यह भी जानते होंगे कि सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोपीय देशों को फासिस्ट हमलों से बचाने में और शोषणमुक्त समाजवादी समाज कायम करने में मदद की थी। दूसरी ओर, माओ त्से-तुंग के नेतृत्व में लम्बी साहसिक लड़ाई के बाद चीन की क्रान्ति की फतह हुई थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद समाजवाद की ताकत में काफी इजाफा हुआ था, कम्युनिस्ट विचारधारा की साख बढ़ी थी और मुक्ति संग्रामों में सोवियत सहायता के बढ़े हुए हाथ के संदेश ने पूँजीवादी-साम्राज्यवादियों की कमर तोड़ दी थी। परन्तु यह दुख की बात है कि जब स्थिति विश्व सर्वहारा क्रान्ति के लिए इतनी अनुकूल थी, तब रूस में स्तालिन के देहान्त के बाद और चीन में माओ त्से-तुंग के मरने के बाद संशोधनवादी हमलों से समाजवाद खतरे में पड़ गया था और अन्ततोगत्वा दोनों देशों में प्रतिक्रान्ति द्वारा पूँजीवाद की पुनर्स्थापना हो गई थी। इस दुखद घटना ने बहुतों के मन में निराशा भी ला दी जिनमें मार्क्सवाद की सही समझदारी की कमी थी। उसी समय बुर्जुआ वर्ग मौके का फायदा उठाते हुए प्रचार में लग गया कि मार्क्सवाद-समाजवाद असफल हो गया है। परन्तु क्या यह सही है?

मार्क्स ने समाजवाद या यहाँ तक कि साम्यवाद के प्रथम चरण या समाजवाद की स्थापना के बाद भी पूँजीवाद की पुनर्स्थापना के खतरे के प्रति किया था आगाह

मैं मार्क्स के कुछ ऐतिहासिक उदाहरण से आपको दिखाऊँगा कि बिना समाजवादी क्रान्ति के गवाह बने उन्होंने समाजवाद, साम्यवाद तथा पूँजीवाद के बीच संक्रमणकाल में किस प्रकार पूँजीवाद काम करता है, इस खतरे के प्रति आगाह किया था। उन्होंने कहा था, "यहां हमारा वास्ता उस साम्यवादी समाज से नहीं है, जो अपनी खुद की बुनियाद पर विकसित हुआ है, बल्कि, इसके विपरीत, उससे है, जो पूँजीवादी समाज से उदित हो रहा है; इस कारण जो आर्थिक, नैतिक और बौद्धिक, हर पहलू से अभी भी उस पुराने समाज की जन्मजात छाप लिये हुए है, जिसके गर्भ से वह निकला है।"[26] मार्क्स की शिक्षाओं से स्पष्ट होता है कि समाजवादी व्यवस्था अपने स्वयं की बुनियाद पर स्थापित एवं विकसित नहीं होगी। यह पूँजीवादी आर्थिक ढांचे की कोख से जन्म लेगी। इसलिए इसमें बुर्जुआ चिंतन, नैतिकता तथा आर्थिक नियम का अवशेष बचा रहेगा। इसी कारण रूस में मोटा मोटी उन्नत अवस्था में समाजवाद हासिल हो जाने के बावजूद, वस्तु विनिमय, मूल्य का नियम, वेतन में अन्तर, सामूहिक खेती (जहां भूमि का मालिकाना तथा उत्पादन के साधन राज्य के थे, किन्तु उपज पर किसानों का अधिकार था) के साथ-साथ सहकारी खेती आदि सभी प्रचलन में था। पूँजीवादी आर्थिक पहलू जैसे व्यक्तिगत बचत, निजी मालिकाने के तहत मुर्गी-पालन, पशु पालन इत्यादि भी प्रचलन में था। इसके अतिरिक्त वहां जनता के बहुसंख्यक हिस्सों में जो मार्क्सवादी नहीं थे बुर्जुआ विचार और आदतें चलन में थी। जिन कम्युनिस्टों का स्तर पर्याप्त हद तक नहीं था, उनमें भी ये विचार और आदतें प्रचलित थी। मार्क्स ने इन खतरों से आगाह किया था।

उन्होंने आगे कहा, *''कम्युनिस्ट समाज की उच्चतर अवस्था में, व्यक्ति की श्रम-विभाजन के प्रति दासत्वपूर्ण अधीनता और उसी के साथ-साथ मानसिक और शारीरिक श्रम के अन्तर्विरोध का लोप हो जाने के बाद, श्रम के जीवन के मात्र एक साधन ही नहीं, बल्कि जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता बन चुकने के बाद; व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उत्पादक शक्तियों के भी बढ़ जाने, और सामाजिक संपदा के सभी स्रोतों के अधिक वेग से प्रवाहवान होने के बाद-इनके बाद ही कहीं जाकर पूंजीवादी अधिकारों के संकीर्ण क्षितिज को पूर्णतः लांघा जा सकेगा और समाज अपनी पताका पर अंकित कर सकेगा : ''प्रत्येक से उसकी क्षमतानुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार!''*[27]

संक्षेप में, इस ऐतिहासिक शिक्षा का मतलब है कि जब तक बुर्जुआ समाज का हर पहलू समाप्त नहीं कर दिया जाता है तब तक व्यक्ति का श्रम विभाजन में समर्पण तथा मानसिक एवं शारीरिक श्रम के बीच संघर्ष का खात्मा नहीं होता है। जब तक श्रम को सामाजिक स्वार्थ के साथ व्यक्तिगत स्वार्थ का एकात्म करने के माध्यम से जीवन के प्रधान उद्देश्य के रूप में पहचान नहीं मिलती है तथा वहां उत्पादन शक्तियों का पूर्ण विकास में उत्पादन की कोई अधिकता नहीं रह

(शेष पृष्ठ 6 पर)

एआईडीएसओ का उत्तर प्रदेश राज्य का 7वां छात्र सम्मेलन सम्पन्न

जौनपुर (उत्तर प्रदेश) : महंगी होती शिक्षा, शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण-सांप्रदायीकरण, छात्राओं की असुरक्षा, छात्र आंदोलन में पुलिसिया दमन, शिक्षकों की पर्याप्त भर्ती न करने, सीबीसीएस व सेमेस्टर सिस्टम के खिलाफ और जनवादी वैज्ञानिक व धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पद्धति की मांग को लेकर 7 अक्टूबर को हिंदी भवन सभागार, जौनपुर में छात्र संगठन एआईडीएसओ का उत्तर प्रदेश राज्य का सातवां छात्र सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सम्मेलन के शुरू होने के पहले सैकड़ों छात्र-छात्राओं का एक जुलूस निकाला गया, जो कृषि भवन परिसर, पॉलिटेक्निक चौराहे से चलकर ओलंदगंज, कोतवाली होते हुए हिंदी भवन पहुंचा। वहां पर सबसे पहले संगठन का लाल झंडा कामरेड अशोक मिश्रा (महासचिव , एआईडीएसओ) ने फहराया। इसके बाद संगठन की राज्य अध्यक्षा कॉ. झरना मालवीय, एसयूसीआई(सी) के उत्तर प्रदेश राज्य सचिव कॉ. पुष्पेंद्र विश्वकर्मा, एआईडीएसओ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष कॉ. अंशुमान राय, अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य कॉ. सचिन जैन ने शहीद वेदी पर माल्यार्पण किया। सम्मेलन की अध्यक्षता व संचालन कॉ. झरना मालवीय (प्रदेश अध्यक्षा) ने किया। सभा के मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के महासचिव कॉ. अशोक मिश्रा, मुख्य अतिथि एसयूसीआई(सी) के उ.प्र. राज्य सचिव कॉ. पुष्पेंद्र विश्वकर्मा, एआईडीएसओ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य कॉ. सचिन जैन, कॉ. रविशंकर मौर्य, संगठन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष कॉ. अंशुमान राय अतिथि थे। संगठन के राज्य सचिव कॉ. हरिशंकर मौर्य ने सेक्रेटरी रिपोर्ट प्रस्तुत की। संगठन के राज्य उपाध्यक्ष कॉ. मिथिलेश कुमार मौर्य ने सम्मेलन को संबोधित किया।

कॉ. झरना मालवीय ने नई राज्य कमेटी का प्रस्ताव रखा। सर्वसम्मति से कॉ. हरिशंकर मौर्य को राज्य अध्यक्ष, विकास कुमार मौर्य को उपाध्यक्ष, दिलीप कुमार खरवार को सचिव, यादवेंद्र पाल को कार्यालय सचिव, प्रवीण विश्वकर्मा को कोषाध्यक्ष, विजय शंकर सिंह, भीम सिंह चंदेल, संतोष प्रजापति, संदीप, वंदना विश्वकर्मा को कार्यकारिणी सदस्य और बृज मोहन, राकेश, अंजली, सरोज, अरमान अली, समरजीत पाल, शिवकुमार, सूर्योदय, अमित, आकाश को काउंसिल सदस्य चुना गया।

सम्मेलन में जौनपुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, लखनऊ, चित्रकूट, बलिया, इत्यादि जिलों से सैकड़ों प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

म.प्र. में पूर्ण शराबबंदी की उठी मांग

भोपाल (म.प्र.) : शराबबंदी करने, बढ़ती अश्लीलता पर रोक लगाने, महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने आदि मांगों पर 3 अक्तूबर को मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में महिला सांस्कृतिक संगठन की ओर से एक विशाल प्रदर्शन किया गया। इसके बाद सभा हुई। संगठन द्वारा 50 हजार लोगों के हस्ताक्षर युक्त एक ज्ञापन एसडीएम की मार्फत मुख्यमंत्री को भेजा गया। सभा को संगठन की राज्य सचिव रचना अग्रवल सहित कई नेत्रियों ने संबोधित किया। एसयूसीआई(सी) के राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल ने एकजुटता का इजहार किया। सभा की अध्यक्षता कॉ. जोली सरकार ने की।

भोपाल : पूर्ण शराबबंदी की मांग पर सड़कों पर उतरी महिलाएं

आजादी आन्दोलन की महान क्रान्तिकारी महिलाओं को किया याद

इलाहाबाद (उ.प्र.) : प्रसिद्ध क्रांतिकारी और शहीदे-आजम भगत सिंह के दल की सदस्या दुर्गा भाभी के स्मृति दिवस के अवसर पर स्वाधीनता आन्दोलन की अद्भुत शौर्य और साहस की मिसाल क्रांतिकारी महिलाओं के चित्रों और विचारों की प्रदर्शनी ''हम नहीं हैं नये लड़ाके/देखो, इतिहास उठा के'' का आयोजन बाल भारती स्कूल के सभागार में ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन के तत्त्वावधान में किया गया।

प्रदर्शनी में, दुर्गा भाभी, प्रीतिलता वादेदार, सुशीला दीदी, कल्पना दत्त, सुहासिनी गांगुली, उज्ज्वला मजूमदार, भीखाजी कामा, लीला नाग (राय), सावित्री देवी, वीणा दास, शांति घोष, सुनीति चौधरी, रानी गिडालू, मातंगिनी हाजरा, कनकलता बरुआ, श्रीदेवी मुसद्दी के अतिरिक्त भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्र नाथ सान्याल की मांओं, भगत सिंह की बहन आदि अनेक जानी-मानी व बहुत-सी भुला दी गयी, लगभग 25 क्रांतिकारी महिलाओं के चित्रों, उनके जीवन-प्रसंगों और विचारों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदर्शनी का उद्घाटन, 14 अक्टूबर को प्रतिष्ठित लेखिका व इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग की प्रो. नीलम सरन गौर ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशीला शर्मा ने किया। प्रदर्शनी में दर्शाये गए अपने जुझारू इतिहास से प्रेरणा लेकर महिलाओं पर बढ़ते अपराधों खिलाफ संघर्ष के लिये आगे आने की अपील की गयी।

इस अवसर पर, बड़ी संख्या में, नगर के प्रतिष्ठित लेखकों, बुद्धिजीवियों, राजनीतिकर्मियों के अलावा रश्मि मालवीय, कल्याणी रायचौधरी, निधि सिंह, संध्या मिश्रा, सुधा त्रिपाठी, गीता त्रिपाठी, लता शर्मा, प्रियंका सिंह, डॉ. आभा अग्रवाल, रेनू, राजेश्वरी आदि उपस्थित थे। प्रदर्शनी को बड़ी संख्या में लोगों ने देखा और सराहा।

मिड डे मील स्कीम को पंचायतों को सौंपने पर जताया रोष

भिवानी (हरियाणा) 3 अक्तूबर को मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन सम्बन्धित एआईयूटीयूसी के बैनर तले मिड-डे मील कार्यकर्ताओं ने मिड-डे मील स्कीम का क्रियान्वयन ग्राम पंचायतों व नगर परिषद् को सौंपे जाने के सरकार के फैसले का विरोध करते हुए शहर में रोष प्रदर्शन किया व जिला उपायुक्त भिवानी के माध्यम से मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार को ज्ञापन सौंपा और इस फैसले को तुरन्त वापस लेने की मांग की। इस रोष प्रदर्शन की अगुवाई मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन की जिला कमेटी और एआईयूटीयूसी के जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड राजकुमार बासिया ने की। इससे पहले सैकड़ों की संख्या में मिड-डे मील कार्यकर्ता एक सभा के रूप में श्री चेतराम प्रजापति धर्मशाला में इकट्ठा हुई।

मिड-डे मील कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए यूनियन की जिला प्रधान मीरा देवराला ने कहा कि हम मिड-डे मील स्कीम का क्रियान्वयन पंचायत विभाग को सौंपे जाने के सरकार के फरमान का विरोध करती हैं। मिड-डे-मील स्कीम सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए है और स्कूलों से संबंधित है इसलिए इसका क्रियान्वयन किसी और के हवाले करना गलत है। सरकार का यह कदम इस स्कीम को भ्रष्टाचार की दलदल में धकेल देगा। सरकार अगर पंचायतों का सशक्तीकरण करना चाहती है तो पुलिस, फोरेस्ट गार्ड, पटवारी, ग्राम सचिव, नम्बरदार आदि की सेवायें पंचायतों को सौंप दें लेकिन मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को बख्श दें। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि सरकार मिड-डे-मील स्कीम जैसी महत्वपूर्ण स्कीम से अपना पल्ला झाड़ लेना चाहती है। पंचायत प्रशासन में कहीं ज्यादा भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और भेदभाव व्याप्त है। मिड-डे-मील स्कीम का क्रियान्वयन पंचायतों को सौंपे जाने से मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं की सेवाएं प्रभावित होने और उनको मिलने वाले मामूली से मानदेय भत्ते में भी गड़बड़ी और अनावश्यक देरी होने की आशंका है। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को स्कूल प्रशासन के साथ-साथ पंचायत सदस्यों व अधिकारियों की भी धोंसपट्टी सहनी पडेगी। इससे वे दोहरे प्रबन्धन में फंस कर रह जायेंगी। मिड-डे-मील स्कीम को पंचायतों को सौंपने के इस सरकारी फरमान से मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं में भारी रोष व्याप्त है। उन्होंने कहा कि मिड-डे मील सरकारी स्कीम है। इसके तहत मिड-डे मील कार्यकर्ता अपनी सेवाएं सरकारी स्कूलों में प्रदान कर रही हैं। मिड-डे मील कार्यकर्ता काम जब सरकारी करती हैं तो सरकार को अपना श्रमिक-कर्मचारी भी मानना चाहिए। मिड-डे मील कार्यकर्ताओं सहित सभी स्कीम वर्करों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना, जीने लायक वेतन देना, भारतीय श्रम सम्मेलन व अन्तर्राष्ट्रीय लेबर कन्वेन्शनों की पालना करना और कमेटियों की सिफारिशों को लागू करना केन्द्र व राज्य सरकारों की जिम्मेदारी बनती है। इसमें राजबाला पालवास, कौशल्या व सुदेश दूल्हेड़ी, प्रेम खरकड़ी, बिमला व संतोष, रोशनी व राजवन्ती धिराणा, ऊषा व सीमा मुंढ़ाल ने अपनी बात रखी।

उन्होंने मांग की कि मिड-डे-मील स्कीम के क्रियान्वयन को पंचायतों को न सौंपा जाए। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाए। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को न्यूनतम वेतन 18000 रुपये मासिक दिया जाए। मिड-डे-मील स्कीम की देखरेख के लिए अलग से स्टाफ भर्ती किया जाए। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया जाए। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं का छूट्टियों के दौरान का मानदेय भत्ता न काटा जाए और समय पर भुगतान किया जाए। मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं को हाजिरी रजिस्टर, मासिक बंधे वेतन, महंगाई के हिसाब से सालाना बढ़ोतरी, जीवन बीमा, भविष्य निधि, ग्रेच्युटी, पेंशन, वर्दी, सवेतन अवकाश, बीमार पड़ने पर इलाज आदि सामाजिक सुरक्षा उपाय व सुविधाएं प्रदान की जाएं।

रेवाड़ी : 9 अक्तूबर को यहां मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन की ओर शहर में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। इसका नेतृत्व यूनियन की नेत्री ओमवती और सुरस्ती ने किया। यूनियन के सलाहकार कॉमरेड राजेन्द्र सिंह एडवोकेट ने कहा कि मिड डे मील स्कीम को पंचायतों को सौंपने का फैसला मिड डे मील वर्करों और स्कूली बच्चों के खिलाफ है। किसान मजदूर नेता कॉ. रामकुमार नीमोठ, ऑल इण्डिया यूटीयूसी के जिला प्रधान अमृतलाल, मजदूर नेता बलराम और मिड डे मील नेत्रियों ने भी अपने विचार रखे।

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 4 का शेष)

जाती है तब तक बुर्जुआ व्यक्तिवाद के अधिकारों को पूरी तरह से काबू नहीं किया जा सकता है। इन तमाम पूँजीवादी तत्वों एवं लक्षणों को जड़मूल से समाप्त करने के बाद ही केवल साम्यवाद का उच्च स्तर प्राप्त किया जा सकता है। आप मार्क्सवादी पैमाने के आधार पर जांच सकते हैं कि कितना पूंजीवादी अभिलक्षण का अवशेष सोवियत समाजवाद में इसके द्रुत विकास के बावजूद स्पष्ट रूप में विद्यमान था। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि पूंजीवाद का इस प्रकार का प्रभाव साम्यवादी समाज के उच्च स्तर पर पहुँचने तक बना रहेगा।

मार्क्स ने यह भी कहा है, *''पूंजीवादी समाज और कम्युनिस्ट समाज के बीच एक से दूसरे में क्रान्तिकारी रूपान्तरण का काल है। इसका समवर्ती एक राजनीतिक संक्रमण काल भी है, जिसमें राज्य सर्वहारा के क्रान्तिकारी अधिनायकत्व के सिवा और कुछ भी नहीं हो सकता।''* [28] *(कार्ल मार्क्स गोथा कार्यक्रम की आलोचना)*

इससे यह स्पष्ट है कि समाजवाद पूँजीवाद एवं साम्यवाद के बीच संक्रमण काल है। इस चरण में वहां एक-दूसरे में क्रान्तिकारी बदलाव हो सकता है। दूसरे शब्दों में यदि वहां मार्क्सवाद का सही प्रयोग हुआ तो समाज साम्यवाद की ओर अग्रसर होगा परन्तु यदि मार्क्सवाद से भटकाव हुआ तब पूँजीवाद की पुनर्स्थापना होगी।

समाजवाद के संभावित खतरों के बारे में तमाम मार्क्सवादी चिंतनकारों ने किया था आगाह

इस प्रकार आप देख सकतें हैं कि समाजवादी क्रान्ति या समाजवादी समाज में पैदा हुई समस्याओं से दो-चार हुए बिना भी मार्क्स विश्लेषण की द्वन्द्वात्मक पद्धति के आधार पर इस प्रकार की समझ व्यक्त कर चुके थे। इसी प्रकार से मार्क्स के बाद लेनिन और स्तालिन, माओ त्से-तुंग और शिवदास घोष भी पूँजीवादी प्रतिक्रान्ति को प्रोत्साहन देने वाले कारकों के प्रति आगाह करते रहे। उनके विचार आप मुझ से तथा अपनी पार्टी के अन्य नेताओं से पहले सुन चुके हैं। इसलिए आज मैं उसे नहीं दुहराना चाहता हूँ। बेशक, न तो मार्क्स और न ही उनके बाद किसी भी मार्क्सवादी चिंतनकार ने यह दावा किया था कि एक बार समाजवाद स्थापित हो जाने के बाद दुबारा पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की कोई संभावनाएं नहीं होगी। अपितु सबों ने इसके विपरीत कहा था। पूंजीवाद की तरह समाजवाद में भी वर्ग संघर्ष जारी रहता है। पूंजीवाद में शासक दुश्मन दृष्टिगत होते हैं। सचेत श्रमिक वर्ग तथा कम्युनिस्ट पार्टी का अगुवा दस्ता क्रान्तिकारी भूमिका अदा करता है। वे पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए क्रान्तिकारी संघर्ष करते हुए अपनी जान न्योछावर करते हैं। परन्तु सत्ता हासिल करने तथा समाजवाद की उन्नति के बाद यथोचित चेतना के अभाव में वहां एक प्रकार से संतुष्टि की भावना उत्पन्न हो जाती है तथा विजित श्रमिक वर्ग के साथ-साथ कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं में एक प्रकार के ढीलाढ़ालापन का रवैया विकसित हो जाने की संभावना बन जाती है। पूर्ववर्ती पूँजीवादी समाज का पूर्वाग्रह, संस्कृति तथा आदतों का प्रभाव बार-बार उभर के सामने आता है तथा अपना विकृत चेहरा दिखाता है। उस स्थिति में बुर्जुआ लोगों ने बदले हुए अवसर का बढ़िया फायदा उठाते हुए तथा चुपचाप छद्म रूप में प्रतिक्रान्ति का जाल बुना। प्रायः यह षड़यंत्र मार्क्सवाद-लेनिनवाद के छद्म स्तुतिगान की आड़ में किया गया। मार्क्सवादी अॅथोरिटियों की ओर से लगातार दी जा रही चेतावनी के बावजूद स्तालिन और माओ त्से-तुंग के बाद के नेताओं का मार्क्सवाद से भटकाव हुआ और वे संशोधनवाद के शिकार हुए, सही रास्ते से भटक गये और प्रतिक्रान्ति का दरवाजा खोल दिया। बेशक, इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति कभी नहीं होती अगर स्तालिन-माओ त्से-तुंग के बाद के समय में मार्क्सवाद को सही तरीके से लागू करते हुए सटीक वर्ग-संघर्ष का संचालन हुआ होता। इसलिए यह किसी भी तरह से मार्क्सवाद या समाजवाद की असफलता नहीं कहीं जा सकती है। अपितु मार्क्स से लेकर तमाम मार्क्सवादी अॅथोरिटी इस प्रकार की संभावनाओं के बारे में सही रूप में शंका व्यक्त कर चुके थे तथा स्पष्ट रूप से समाजवाद को बचाने की खातिर संघर्ष की सही पद्धति को इंगित कर चुके थे। उसी समय यह समझने की जरूरत है कि ईस्टर वर्ष के धार्मिक आन्दोलन के दौरान धर्म प्रचारकों को जो स्वयं के पास दैवीय शक्ति होने का दावा किया करते थे, उन्हें भी सालों-साल लड़ाई करनी पड़ी थी तथा अन्तिम विजय के लिए जय-पराजय का सामना करना पड़ा था। उसी तरह पुनर्जागरण से लेकर बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति को विजयी बनाने में 350 वर्ष संघर्ष करना पड़ा था। ये दोनों वर्ग शोषण को खत्म करने की लड़ाई नहीं थी अपितु एक व्यवस्था को बदलकर दूसरे वर्ग शोषण का स्थान बनाना था तथा समाजवादी क्रान्ति एक ऐसी विरल क्रान्ति है जो हजारों वर्षों चला आ रहा, दास प्रथा से लेकर सामंतवाद से होते हुए पूंजीवाद तक हर प्रकार के शोषण का खात्मा करेगी। उसकी तुलना में रूस में 70 साल के समाजवाद की क्या औकात थी, जो चारों ओर से दुनियाभर के पूँजीवादी-साम्राज्यवादियों से घिरा है? फिर भी जहां तक समाजवाद ने लेनिन-स्तालिन- माओ त्से-तुंग के नेतृत्व में अपना कदम बढ़ाया, श्रमिक वर्ग के नेतृत्व में मानवता के इतिहास में यह साबित किया कि यह नयी सभ्यता का सृजन है।

समाजवाद की असफलता से लेना चाहिए सबक

इसलिए समाजवाद की अस्थायी पराजय से हताशा-निराशा का कोई कारण नहीं है। निराशा झूठी-काल्पनिक अपेक्षा से आती है। मार्क्सवादियों की आशा और उम्मीद की किरण और दृढ़विश्वास विज्ञान, इतिहास एवं इंसानियत है। उन्नति के संघर्ष में अक्सर जीत के साथ हार भी होती हैं। कभी-कभी जीत होती है तो कभी इसके विपरीत। सभी कुछ निश्चित कार्य-कारण के नियम द्वारा संचालित होता है। 1871 में फ्रांस के श्रमिक वर्ग ने बुर्जुआ वर्ग को पराजित कर दिया था और पेरिस कम्यून की स्थापना की थी। यह तीन महीने तक चला। परन्तु फिर यह बुर्जुआ वर्ग के हाथों पराजित हुआ। बुर्जुआ वर्ग द्वारा हजारों श्रमिक बिना कोई मुकदमा चलाये कत्ल कर दिए गये। पेरिस की सड़कें खून से लथपथ हो गयी थी। जब मजदूरों के एक समूह को सजा के स्थान पर ले जाया गया, तो एक बहादुर मजदूर ने *इन्टरनेशनल* गान लिखा जिसने सभी देशों के क्रान्तिकारियों, मुक्ति संग्रामों एवं जन आन्दोलनों को प्ररेणा दी और आज भी दे रहा है। मार्क्स जीवित थे। पेरिस कम्यून ने जो प्रतिघात झेला था उससे जरूरी सबक लेकर उन्होंने दुनिया के मजदूरों को कहा था, *''कम्यून ने एक बात तो खास तौर से साबित कर दी, वह यह कि ''मजदूर वर्ग राज्य की बनी-बनायी मशीनरी पर कब्जा करके ही उसका उपयोग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नहीं कर सकता।''* [29] लेनिन ने इस सबक को रूस में प्रयोग किया। उसी तरह रूस, चीन एवं पूर्वी यूरोप के बुर्जुआ वर्ग प्रतिक्रान्ति से उपयुक्त सबक लेते हुए आज मार्क्सवादी आश्वस्त होंगे कि जहां कहीं भी समाजवादी क्रान्ति सफल की गई है। सत्ता से हटा दिये गए बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ न केवल आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में बल्कि ऊपरी ढांचे अर्थात् चिंतन-संस्कृति, आदत-स्वभाव के मामलों में भी जब तक साम्यवाद हासिल नहीं हो जाता, तीव्र निरन्तर वर्ग-संघर्ष संचालित करना पड़ा है। प्रत्येक जगह शोषित समाज बदलाव के लिए, मुक्ति के लिए उठ खड़ा हो रहा है। भारत सहित पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में यहां तक कि अमेरिका में भी बार-बार श्रमिक वर्ग का आन्दोलन स्वतःस्फूर्त रूप में फूट रहा है। यह जन-विरोध का विस्फोट है। परन्तु रास्ता पता नहीं है, न ही कोई नेतृत्व वहां सही है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद- शिवदास घोष के चिंतन से लैस केवल एक सही क्रान्तिकारी पार्टी ही वह इच्छित नेतृत्व प्रदान कर सकती है। मजदूर वर्ग जिसे मार्क्स ने पूँजीवाद की क्रब खोदने वाला बताया था, उसको क्रान्तिकारी राजनीति तथा उच्च सर्वहारा मूल्य व नैतिकता के आधार पर एकजुट हो जाना चाहिए।

मार्क्स का दुष्कर व पीड़ादायक जीवन

अब मैं आपके सामने संक्षेप में विवरण रखना चाहूँगा कि महान, मार्क्स को किस प्रकार के विरोधाभाषी स्थिति में संघर्ष करना पड़ा था और किस प्रकार मौजूदा ज्ञान भण्डार के अध्ययन का उन्होंने बीड़ा उठाया तथा ज्ञान का उत्सर्जन किया। यह सभी देशों के सभी समय में तमाम क्रान्तिकारियों के लिए प्रेरणा का श्रोत होगा। आप में बहुत सारे जानते हैं कि क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रतिपादन के लिए तथा विभिन्न यूरोपियन देशों में श्रमिक वर्ग के संघर्षों के साथ जुड़े रहने के चलते मार्क्स को जर्मनी, फ्रांस तथा बेल्जियम से कई बार देश निकाला हुआ था। अन्त में लन्दन में उनको आश्रय मिला। बहुत सारे लोग यह नहीं जानते कि कैसे उन दिनों को उन्होंने गुजारा। उनकी पत्नी जेनी मार्क्स तथा लेनिन की लेखनी से मैंने कुछ जाना है। आप भी सुनेंगे तो आप अपने आंसू नहीं रोक पायेंगे।

लेनिन ने लिखा था,*''...उनका प्रवास-जीवन अत्यंत कठोर था। मार्क्स और उनके परिवार को दुःसह निर्धनता का सामना करना पड़ा। यदि एंगेल्स ने सदा निःस्वार्थ भाव से मार्क्स की आर्थिक सहायता न की होती, तो न केवल मार्क्स 'पूंजी' को ही पूरा न कर पाते, वरन् अभावग्रस्त होकर निश्चय ही मर मिटते।''* [30]

अब सुनिये कि कितने गहरे दर्द के साथ और कितने हृदय विदारक शब्दों में मार्क्स की पत्नी एवं उनकी सहयोगी जेनिफर मार्क्स ने अपने मित्रों को लिखे पत्रों में उन कष्टमय दिनों का वर्णन किया था। मैं यहां ऐसे दो पत्रों के कुछ हिस्सों को पढ़कर सुना रहा हूँ। वे लिखती हैं : *''एक दिन 1845 के शुरू में यकायक हमारे घर पर पुलिस कमिश्नर आ धमका और उसने प्रशियाई सरकार की दर्ख़ास्त पर गीजो द्वारा जारी किया गया निर्वासन का हुक्मनामा दिखाया। उसमें लिखा था : ''कार्ल मार्क्स 24 घंटे के भीतर जरूर पेरिस छोड़ दें।'' मुझे कुछ अधिक मुहल्लत दी गई, जिसका इस्तेमाल मैंने अपना फर्नीचर और कुछ कपड़े बेचने में किया। उनके दाम मुझे हास्यास्पद रूप से कम मिले, लेकिन यात्रा के लिए पैसे तो जुटाने ही थे। ... काफी रात गए दो व्यक्ति हमारे घर में घुस आये। उन्हें कार्ल की जरूरत थी। उनके सामने आने पर उन दोनों ने अपने को पुलिस सार्जेंट बताया और कहा कि उनके पास कार्ल को गिरफ्तार करके पूछताछ के लिए ले जाने का वारंट है। वे कार्ल को ले गए। मैं बहुत ही चिंताकुल होकर प्रभावशाली लोगों के यहां यह पता लगाने के लिए भागी कि आखिर मामला क्या है। मैं अंधेरे में घर-घर दौड़ रही थी कि अचानक एक गार्ड ने मुझे पकड़ लिया और गिरफ्तार करके एक अंधेर कैदखाने में डाल दिया। वहां बेघर-बार कंगले, लावारिस आवारा लोग और किस्मत की मारी पतित महिलाएं रखी जाती थीं। मुझे एक काल-कोठरी में ठूंस दिया गया। जब मैं सिसकती हुई उसमें दाखिल हुई, तो बदनसीबी की शिकार एक सहवासिनी ने मुझे अपनी सोने की जगह पेश कर दी। वह सख्त तख़्तों की बनी चौकी थी, जिस पर मैं लेट गई। सुबह की रोशनी फूटते ही अपने सामने की खिड़की पर लोहे की छड़ों के पीछे मुझे मुरझाया-सा गमगीन चेहरा दिखाई पड़ा। मैं खिड़की पर गई और अपने नेक पुराने दोस्त जीगो को पहचान गई। मुझे देख कर उन्होंने नीचे की तरफ देखने का संकेत किया। मैंने उस दिशा में निगाह डाली तो देखा कि कार्ल को फौजी पहरे में ले जाया जा रहा था। एक घंटे बाद मुझे भी पूछताछ करने वाले मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। दो घंटे की पूछताछ के बाद, जिसके दौरान उन्हें शायद ही मुझसे कुछ सूचना प्राप्त हुई होगी, पुलिसवालों ने मुझे एक बग्घी तक पहुंवा दिया और शाम के करीब मैं अपने बेचारे तीनों नन्हे-नन्हे बच्चों के पास पहुंच गई।...*

मैं उनके पीछे जुलाई 1849 में पेरिस पहुंची और हम वहां एक महीना रहे। लेकिन हमें वहां भी चैन नहीं मिलना था। एक दिन वही परिचित पुलिस सर्जेंट फिर आया और हमें सूचित कर गया कि ''कार्ल मार्क्स और उनकी पत्नी 24 घंटे के भीतर पेरिस छोड़ दें''। दया प्रदर्शित करते हुए कार्ल को मोर्बिआन के अंतर्गत वान्न में शरणार्थी की हैसियत से रहने की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कार्ल मार्क्स

(पृष्ठ 6 का शेष)

इजाजत दे दी गई। जाहिर है कि कार्ल इस प्रकार का निर्वासन नहीं स्वीकार कर सकते थे।। मैंने लन्दन में पक्के आश्रय-स्थल की तलाश के लिए फिर अपना बोरिया-बंधना समेटा। ...

1850 के बसन्त में हमें अपना चेल्सी वाला मकान छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। मेरा बेचारा नन्हा फ़ॉक्स बराबर बीमार रहता था और दैनिक जीवन की चिन्ताएं मेरे स्वास्थ्य को भी नष्ट किये दे रही थी। सभी तरह से सते-सताये और लेनदारों से परेशान हम एक हफ्ते तक लिसेस्टर स्क्वेयर के एक जर्मन होटल में ठहरे। हम वहां अधिक नहीं रह सके। एक दिन सुबह हमारे मेहरबान मेजबान ने हमें नाश्ता देने से इनकार कर दिया और हमें विवश होकर अपने लिए दूसरा बासा तलाश करना पड़ा। ...

बेचारा नन्हा एडगर अपने हर्षोत्फुल्ल चेहरे से उछलता हुआ मेरे स्वागत को लपका और मेरे नन्हें फ़ॉक्स ने मेरी ओर अपनी नन्ही-नन्ही बांहें फैला दी। उसके लाड़-प्यार का सुख मुझे अधिक दिन नहीं प्राप्त हो सका। बच्चा फेफड़ों के शोथ की ऐंठन के दौरे से नवम्बर में मर गया। मुझे दारुण दुख हुआ। मैंने यह अपना पहला बच्चा खोया था। उस समय मुझे इस बात का गुमान तक नहीं था कि अभी और ऐसे दु:ख भोगने पड़ेंगे, जिनके सामने अन्य सभी दु:ख नगण्य प्रतीत होंगे। ...

1852 में ईस्टर के दिन हमारी नन्ही फ़्रान्सिस्का को सख्त ब्रांकाइटिस हो गई। तीन दिन तक वह जिन्दगी और मौत के बीच पड़ी रही। उसे भयानक कष्ट सहना पड़ा। उसके मर जाने पर उसके नन्हे-से निर्जीव शरीर को पीछे के कमरे में छोड़ कर हम आगे के कमरे में आ गए और रात को वहीं फ़र्श पर अपने बिस्तर लगा लिए। हमारे तीनों जीवित बच्चे हमारे पास लेटे थे और हम सभी उस नन्ही प्यारी बच्ची के लिए रोते रहे, जिसकी निर्जीव ज़र्द लाश साथ के कमरे में पड़ी हुई थी। उस प्यारी बच्ची की मौत कठोरतम अभावों के दौरान हुई, ठीक उस समय जब हमारे जर्मन मित्र हमारी सहायता करने में असमर्थ थे। एर्नेस्ट जोन्स ने, जो उन्हीं दिनों हमारे यहां अक्सर आया करते थे और देर-देर के लिए आया करते थे, हमारी सहायता करने का वायदा किया, लेकिन वे भी कुछ नहीं कर सके... बहुत भारी मन से मैं झटपट एक फ्रांसीसी उत्प्रवासी के यहां गई, जो हम से बहुत दूर नहीं रहते थे और हम लोगों से मिलने आया करते थे। मैंने उनसे उस भयानक विपत्ति में सहायता की याचना की और उन्होंने अत्यंत मैत्रीपूर्ण सहानुभूति के साथ मुझे फौरन दो पौण्ड दिये। उस धन का उपयोग उस ताबूत का दाम अदा करने में किया गया, जिसमें मेरी बच्ची चिरशांति की गोद में लेटी हुई है। जन्म लेने पर उसे पालना नहीं नसीब हुआ और बहुत समय तक वह अन्तिम विश्राम-स्थल से भी वंचित रही। कितने दु:खी मन से हमने उससे विदा ली! ....

6 जुलाई को हमारी सातवीं सन्तान पैदा हुई, लेकिन कुछ ही सांसें लेने के लिए। इसके बाद वह क़ब्रिस्तान में अपने भाई-बहनों के पास पहुंच गई..।'' [31]

''लेकिन परिस्थितियां मुझे कलम उठाने को विवश कर रही हैं। प्रार्थना है कि 'रिव्यू' से जो भी रकम मिली हो, या मिलने वाली हो, वह यथासंभव शीघ्र भेजें। हमें उसकी बहुत ही आवश्यकता है। हम पर निश्चय ही यह लांछन कोई नहीं लगा सकता कि हम बरसों से जो कुर्बानियां कर रहे हैं और मुसीबतें झेल रहे हैं, उनका कभी कोई दिखावा किया गया है। हमारी परिस्थियों की जनता को बहुत कम, या बिलकुल नहीं के बराबर जानकारी है। मेरे पति ऐसे मामलों में बहुत संवेदनशील हैं और वे आधिकारिक रूप से मान्य ''महापुरुषों'' के जनवादी भिक्षाटन की अपेक्षा अपनी अंतिम कौड़ी तक कुर्बान कर देना बेहतर समझेंगे।...

यह सब बावजूद इसके कि उन्हें बलपूर्वक निष्कासित किया जाता था। आप जानते हैं कि हमने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। मैं चांदी की अपनी आखिरी चीजें गिरवी रखने फ्रैंकफुर्त गई। मैंने कोलोन में अपना फर्नीचर बिकवा दिया, क्योंकि मेरे कपड़े-लत्ते तक कुर्क हो जाने का खतरा था। प्रतिक्रांति के दुर्भाग्यपूर्ण दौर के शुरू में मेरे पति पेरिस चले गए, जिनके पीछे-पीछे अपने तीनों बच्चों को लेकर मैं भी वहां पहुंची। लेकिन वे वहां अभी जमे ही थे कि उन्हें निर्वासित कर दिया गया और मुझे तथा मेरे बच्चों को भी उसके बाद वहां रहने की इजाजत नहीं दी गई। ...

मैं किसी अतिरंजना के बिना अपने यहां के जीवन के एक दिन का विवरण दूंगी, और आप देखेंगे कि शायद बहुत कम उत्प्रवासियों ने ऐसा कुछ भी झेला होगा। यहां चूंकि धायें बहुत महंगी हैं, इसलिए सीने और पीठ में निरंतर भयानक दर्द के बावजूद मैंने नई सन्तान को अपना ही दूध पिलाने का निश्चय किया। लेकिन बेचारे शिशु ने दूध के साथ इतनी अधिक परेशानी और दमित चिन्ता पी ली कि खुद लगातार बीमार और दिन-रात तीव्र पीड़ा से ग्रस्त रहने लगा। दुनिया में आने के बाद से कभी भी रात भर नहीं सोया, अधिक से अधिक दो या तीन घंटे और सो भी कभी-कभार ही सोया है। हाल ही में उसे सख्त ऐंठन भी हुई थी और निरंतर जीवन और मृत्यु के बीच झूलता रहा है। अपनी पीड़ा में उसने मेरी छाती को इतने जोर से चूसा कि वह छिल गई, खाल फट गई और उसके कांपते नन्हे मुंह से अक्सर खून ढलने लगा। एक दिन मैं इसी प्रकार उसे लेकर बैठी हुई थी कि हमारे मकान की प्रबन्धिका आ गई। हम उसे जाड़ों में 250 थालेर अदा कर चुके थे और उससे इस बात का करार हो चुका था कि बाकी रकम उसे नहीं, बल्कि मकान-मालिक को अदा की जाएगी।, जो उसके खिलाफ कुर्कीनामा हासिल कर चुका था। वह करार से मुकर गई और हमसे बकाया 5 पौण्ड की मांग की। चूंकि हमारे पास उस समय पैसे नहीं थे (नाउट का पत्र उसके बाद आया), इसलिए दो कुर्क-अमीन हमारी सारी स्वल्प सम्पत्ति-बिस्तरे, कपड़े-लत्ते असब कुछ, यहां तक कि मेरे बेचारे बच्चे का पालना और जार-जार रोती हुई मेरी बेटियों के बेहतरीन खिलौने भी कुर्क कर गए उन्होंने दो घंटे में आकर सब कुछ उठा कर ले जाने की धमकी दी। उस सूरत में मुझे दुखती छाती के साथ अपनी ठिठुरती सन्तानों को लेकर फर्श पर सोना पड़ता। हमारे मित्र श्राम्म हमारे लिए सहायता प्राप्त करने शहर भागे। लेकिन वे ज्यों ही एक घोड़ा गाड़ी में सवार हुए कि घोड़े बेकाबू हो गए और श्राम्म गाड़ी में से कूद पड़े। वे खून से लथ-पथ वापस लाए गए, जहां मैं अपने ठंड से कांपते बच्चों के साथ आंसू बहा रही थी। ...

मैंने झटपट अपने पलंग बेच डाले, क्योंकि कुर्की की शर्मनाक घटना से घबरा कर वे सभी अचानक अपने हिसाब की भरपाई के लिए मुझ पर टूट पड़े थे। हमारे बेचे गए पलंग बाहर निकाले गए और उन्हें एक गाड़ी में लादा गया। इसके बाद क्या हुआ था? सूर्यास्त के बाद का समय था। हम अंग्रेज कानून की अवहेलना कर रहे थे। मकान-मालिक दो पुलिसवालों को लिए हमारे यहां दौड़ा आया और यह दावा किया कि हम विदेश भाग जाना चाहते हैं और हमारी चीजों में उसकी अपनी चीजें भी हो सकती हैं। कोई पांच मिनट में ही दो-तीन सौ लोग, चेल्सी की पूरी भीड़, हमारे दरवाजे के इर्द गिर्द जमा हो गई। पलंग फिर अंदर लाए गए क्योंकि उन्हें खरीदारों को दूसरे दिन सूर्योदय के बाद ही दिया जा सकता था। अन्त में अपना सारा सामान बेच कर ही हम कर्ज की अन्तिम कौड़ी तक चुकाने लायक हुए। मैं अपने नन्हे-मुन्नों के साथ नं. 1, लिसेस्टर स्ट्रीट, लिसेस्टर स्क्वेयर पर एक जर्मन होटल के दो कमरों में उठ आई, जहां हम इस समय हैं।...

प्रिय मित्र, आप मुझे हमारे जीवन के एक दिन के इस लम्बे और ब्योरेवार विवरण के लिए क्षमा करें। मैं जानती हूँ कि यह शालीनता नहीं है, लेकिन आज की शाम मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है और मैं सबसे पुराने, सबसे अच्छे और सबसे वफादार दोस्त के सामने कम से कम एक बार तो अपने हृदय का बोझ हल्का कर लेना चाहती हूँ। यह न सोंचे कि इन तुच्छ दुश्चिन्ताओं ने मुझे झुका दिया है; मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ कि हमारा संघर्ष एकाकी नहीं है और मैं तो खास तौर से भाग्यशालिनी हूँ, सुखी हूँ, तकदीर की चहेती हूँ क्योंकि मेरे प्यारे पति मेरे साथ हैं, जो मेरे जीवनाधार हैं। वस्तुत: जिस बात से मुझे आन्तरिक पीड़ा होती है और मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है, वह यह है कि उन्हें बहुत ही तुच्छ चीजों के लिए इतना अधिक कष्ट भोगना पड़ता है, कि उनकी इतनी कम सहायता की जा सकती है, कि जिसने राजी-खुशी से अनेक दूसरे लोगों की सहायता की, अब वह खुद इतना असहाय है। लेकिन, प्रिय वेडेमेयर, यह न सोचिए कि हम किसी से कुछ मांग करते हैं। मेरे पति ने जिन लोगों को अपने विचारों का भागीदार बनाया, प्रोत्साहन दिया, समर्थन दिया, उनसे वे केवल इतनी ही मांग कर सकते थे कि वे अधिक कारोबारी जोश प्रदर्शित करें, उनके 'रिव्यू' का अधिक साथ दें। यह दावा तो मैं गर्व और साहस के साथ कर सकती हूँ। उतने स्वल्प के तो वे अधिकारी थे और मैं समझती हूँ कि यह किसी के प्रति अन्याय न होता। यही चीज मुझे दुखी करती है। लेकिन मेरे पति की राय भिन्न है। उन्होंने अधिकतम भयानक घड़ियों में भी भविष्य के प्रति अपने विश्वास, अपनी खुशमिज़ाजी तक को भी कभी नहीं खोया। मुझे और लाड़ से मेरे साथ चिपटते हुए अपने बच्चों को खुश देख कर वे सन्तुष्ट रहते हैं।' [32]

आप निश्चित रूप से ये सब सुनने के बाद गहरे सदमे में डूब गये होंगे। कितनी दुर्द्धर्ष गरीबी और भूख व इलाज से महरूम बच्चे की लगातार मृत्यु की असहनीय पीड़ा मार्क्स को अपने जीवन में झेलनी पड़ी। परन्तु इन अभावों तथा संकटों ने इस महान व्यक्ति के शोषित जनता के मुक्ति संघर्ष को समर्पित संघर्ष के अथक परिश्रम को तनिक भी प्रभावित नहीं किया। वे इस संघर्ष को मृत्युपर्यंत चलाते रहे। मानवता की उन्नति के लिए नया रास्ता प्रशस्त करने की खातिर वे तिल-तिल कर मरते रहे। उनकी शिक्षायें और मार्गदर्शन युग-युगों तक सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेगा।

विश्व सर्वहारा क्रान्ति सफल करने के लिए महान मार्क्स-एंगेल्स के ऐतिहासिक 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' में दर्ज आह्वान को याद करते हुए मैं आज यहीं इसे समाप्त करूंगा। सर्वहारा के पास खोने के लिए गुलामी की जंजीरों के सिवा, और कुछ भी नहीं है, जीतने के लिए सारी दुनिया है।

उद्धरणों के सूत्र :—

1 अद्वैत वेदांत, वैज्ञानिक धर्म
2 हेगेल के अधिकार के दर्शन की आलोचना
3 एंगेल्स शुरूआती ईसाई धर्म के इतिहास के प्रसंग में
3a पूंजी, भाग 1 के दूसरे जर्मन संस्करण का परिशिष्ट
4 एंगेल्स प्रकृति की द्वंद्वात्मकता
5 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
6 मार्क्स-एंगेल्स, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 5, पृ. 429
7 राजनैतिक अर्थशास्त्र की आलोचना में एक योगदान की भूमिका
8 द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद
9 राजनैतिक अर्थशास्त्र की आलोचना में एक योगदान
9a राजनैतिक अर्थशास्त्र की आलोचना में एक योगदान की भूमिका, पृ.3
10 राजनैतिक अर्थशास्त्र की आलोचना में एक योगदान
11 कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र के जर्मन संस्करण की भूमिका
12 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
13 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
13a कार्ल मार्क्स फ्रेडरिक एंगेल्स कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र
14 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
15 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
16 'लुडविग फुअरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अन्त' में एंगेल्स द्वारा उद्धृत
17 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
18 'लुडविग फुअरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अन्त' में एंगेल्स द्वारा उद्धृत
19 कार्ल मार्क्स लुडविग फुअरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अन्त
19a कार्ल मार्क्स लुडविग फुअरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अन्त
20 कार्ल मार्क्स फुअरबाख पर निबंध
21 कार्ल मार्क्स लुडविग फुअरबाख और क्लासीकल जर्मन दर्शन का अन्त
22 कार्ल मार्क्स की समाधि पर भाषण
23 फ्रेडरिक एंगेल्स के बारे में — लेनिन
24 हमारा कार्यक्रम — ''रोबोचाया गजेटा'' के लिए लेख
25 लेनिनवाद के आधार
26 कार्ल मार्क्स गोथा कार्यक्रम की आलोचना
27 कार्ल मार्क्स गोथा कार्यक्रम की आलोचना
28 कार्ल मार्क्स गोथा कार्यक्रम की आलोचना
29 कार्ल मार्क्स फ्रेडरिक एंगेल्स 1872 के जर्मन संस्करण की भूमिका
30 कार्ल मार्क्स — व्ला. इ. लेनिन
31 जेनी मार्क्स द्वारा लिखित एक घटनापूर्ण जीवन पर विहंगम दृष्टि
32 जेनी मार्क्स द्वारा जोसेफ वेडेमेयर को फ्रैंकफुर्त एम मेन में 20 मई 1850

●●●

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Publication : November 5, 2017

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 से 21 नवम्बर, 2017

महान नवंबर क्रांति शताब्दी वर्ष पर छात्र सेमिनार

भोपाल : सेमिनार को सम्बोधित करते हुए कॉ. अशोक मिश्रा

भोपाल (म.प्र.) : 10 अक्टूबर को छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा महान रूसी नवंबर क्रांति को लेकर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता संगठन के राज्य अध्यक्ष मुदित भटनागर ने की। सेमिनार के मुख्य वक्ता छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ के अखिल भारतीय महासचिव अशोक मिश्रा ने वक्तव्य रखते हुए कहा कि हम सभी ने कभी ना कभी, कहीं ना कहीं यह जरूर सुना है कि अमीर गरीब, ऊंच-नीच तो समाज में सदियों से रहे हैं और रहेंगे इसे खत्म नहीं किया जा सकता; सब को सब कुछ नहीं मिल सकता, लेकिन रूस की महान नवंबर क्रांति ने इस धारणा को बदल दिया था। क्रांति से पहले रूस महंगाई, बेरोजगारी, अश्लीलता, नशाखोरी से पीड़ित था जिसे उस समय यूरोप का कोढ़ कहा जाता था क्रांति के बाद इन सारी समस्याओं को रूस में कुछ ही वर्षों में पूरी तरह खत्म कर दिया गया। आज हमारा देश भी इन समस्याओं से ग्रसित है आम जनता का शोषण तीव्र हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इन समस्याओं को खत्म करने के लिए भारत में पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति ही एकमात्र रास्ता है जोकि देश को इन सारी समस्याओं से मुक्त कर सकती है। हमें नवंबर क्रांति की सीखों को लागू करते हुए देश भर में आंदोलन गठित करने की आवश्यकता है।

कानपुर में जनसभा आयोजित

ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर की मध्य उ. प्र. क्षेत्रीय कमेटी द्वारा 12 अक्तूबर को महान नवम्बर क्रान्ति के 100 साल पूरे होने पर गोल चौराहा स्थित चन्द्रशेखर आजाद वाटिका में एक जनसभा की गई। सभा की अध्यक्षता एआईयूटीयूसी की उत्तर प्रदेश क्षेत्रीय कमेटी के सचिव मान सिंह सूर्यवंशी ने की। मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के उ.प्र. राज्य सचिव कॉमरेड पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा ने सभा को सम्बोधित किया। एआईयूटीयूसी के राज्याध्यक्ष कॉ. राजबली, उपाध्यक्ष कॉ. धर्मदेव, राज्य कार्यालय सचिव कॉ. वालेन्द्र कटियार, क्षेत्रीय कमेटी सदस्य कॉ. जीतराम, कॉ. अर्चना भोसले, कॉ. मंजू शर्मा, कॉ. आर. डी. गौतम, कॉ. आर.पी. साहू, कॉ. असित कुमार सिंह, रामभजन आदि ने भी सभा को संबोधित किया।

कॉमरेड सलील चक्रवर्ती ने अपनी अंतिम सांस ली

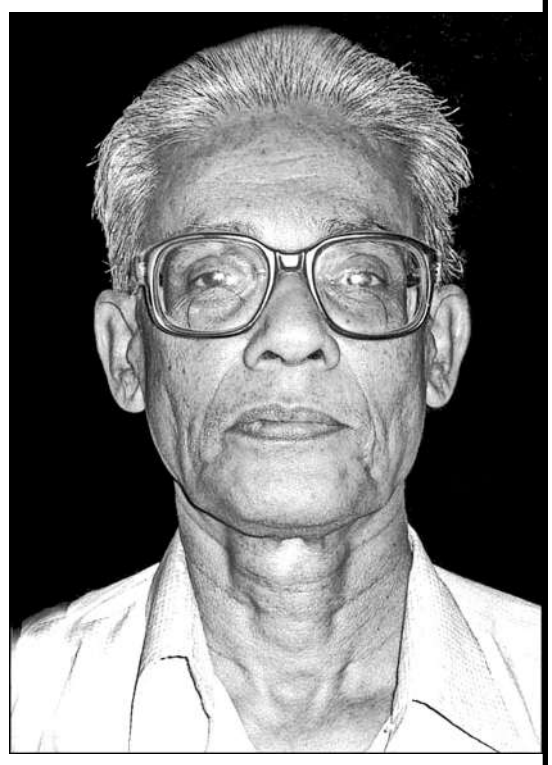

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के वयोवृद्ध सदस्य, कॉमरेड सलील चक्रवर्ती ने कलकत्ता हार्ट क्लिनिक और अस्पताल में 27 दिन तक चले इलाज के बाद 13 अक्तूबर 2017 को अंतिम सांस ली। वे 76 साल के थे।

दक्षिण कोलकाता में आशुतोष कॉलेज में 1956 में एआईडीएसओ ने छात्र संघ चुनाव में जीत हासिल की थी और उसके बाद से, आने वाले कई सालों तक यूनियन बनाने के लिए यह जीत जारी रही, उस समय के छात्र आंदोलन में एक प्रमुख भूमिका निभाती रही। उस समय एक अग्रणी छात्र संगठक (अब पार्टी के महासचिव) कॉमरेड प्रभास घोष ने कॉलेज के छात्रों से एआईडीएसओ में शामिल होने का एक आह्वान किया था। उनके इस आह्वान पर महान मार्क्सवादी विचारक कॉमरेड शिवदास घोष के क्रांतिकारी विचारों से लैस होकर आशुतोष कॉलेज और अन्य जगहों के कई छात्र एआईडीएसओ के बैनर के तले छात्र आंदोलन में शामिल हुए थे।

आशुतोष कॉलेज में दाखिला लेने के बाद 1957 में कॉमरेड सलील चक्रवर्ती एआईडीएसओ में शामिल हो गए और जल्द ही उनकी अगली कतार में से एक के रूप में सामने आए, जो कि उनके संघर्ष की वजह से एक अवधि के लिए एआईडीएसओ के कार्यालय सचिव और पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी और बाद में अखिल भारतीय कमेटी के सदस्य बन गये। यह उनकी पहलकदमी पर ही और उनके संपादन में ही आशुतोष कॉलेज के छात्रों ने एक दीवार पत्रिका, *छात्र संहति* (छात्र एकता) प्रकाशित की। उन्होंने इसी नाम से एआईडीएसओ के बंगाली मुखपत्र के प्रकाशन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1962 में आशुतोष कॉलेज की अथोरिटियों के खिलाफ एआईडीएसओ ने छात्रों की विभिन्न महत्वपूर्ण मांगों पर एक जोरदार संघर्ष छेड़ा था। प्रतिशोधी महाविद्यालय अथोरिटियों ने कॉमरेड चक्रवर्ती सहित एआईडीएसओ के सात संगठकों को कॉलेज से निकाल दिया था।

कॉमरेड शिवदास घोष के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित कॉमरेड चक्रवर्ती पार्टी के पूरे समय के क्रांतिकारी कैडर बनने के संघर्ष में लग गए थे। अपने समृद्ध परिवार की पृष्ठभूमि के आकर्षण को अलग रखते हुए उन्होंने पार्टी के एक सेंटर में रहना शुरू कर दिया था। अपने लंबे जीवन के दौरान, जो विभिन्न महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां उन्हें सौंपी गयी, उनको उन्होंने ईमानदारी से निभाया था। इनमें तत्कालीन शुल्क वृद्धि के खिलाफ 1958 में निरंतर छात्र आंदोलन के साथ ही साथ 1959 और 1966 के ऐतिहासिक खाद्य आंदोलन की जिम्मेदारियां भी शामिल थी। 1967 में जब पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के संस्थापक सदस्य कॉमरेड सुबोध बनर्जी संयुक्त मोर्चा सरकार का श्रम मंत्री बने और बाद में 1969 में दूसरी संयुक्त मोर्चा सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री बने, तो कॉमरेड चक्रवर्ती को मंत्री के व्यक्तिगत सहायक (पीए) के रूप में कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उन्होंने यह जिम्मेदारी बड़ी ईमानदारी और निपुणता से निभाई थी। 1971 में, जब पार्टी कॉमरेडों के अथक प्रयास से और जनता की सभी प्रकार की सहायता से पार्टी प्रेस लगाई गयी थी, तब केंद्रीय कमेटी की देखरेख में कॉमरेड चक्रवर्ती को प्रेस का प्रभार दिया गया था। तब से लेकर 2009 तक 38 वर्ष तक यह जिम्मेदारी उन्होंने पूरी क्षमता और दक्षता के साथ निभाई थी।

स्वभाव से, कॉमरेड चक्रवर्ती दयालु और भावुक थे। वे गरीब परिवारों से आये सहकर्मियों और समर्थकों, विशेष कर छोटे सहकर्मियों को संकट में सभी मदद देने के लिए हरदम तैयार रहते थे। वे मृदु-भाषी और सुशील थे, तमाम तबकों और पेशों के आम लोगों को अपना मित्र और परिचित भी बना लेते थे।

कॉमरेड सलील चक्रवर्ती लंबे समय से फेफड़े के संक्रमण से पीड़ित थे और बाद में गुर्दे की समस्या पैदा हो गई थी, साथ ही हालात में तेजी से उतार-चढ़ाव होने लगा था। यहां तक कि कलकत्ता हार्ट क्लिनिक और अस्पताल के डॉक्टरों की टीम द्वारा डायलिसिस की सलाह दी गई थी, जिनसे वे इलाज करवा रहे थे। रक्तचाप से संबंधित समस्याओं की वजह यह एक बार से अधिक नहीं किया जा सका। आखिरकार 13 अक्तूबर को दोपहर 1:30 बजे उनकी मौत हो गई। उनके निधन की खबर पर, पश्चिम बंगाल में पार्टी के राज्य कार्यालय और सभी पार्टी कार्यालयों पर लाल झंडे आधे झुका दिये गये थे। उनकी मृत देह 14 अक्टूबर की सुबह तक वहीं रखी थी, 10 बजे जब सहकर्मियों, समर्थकों और प्रशंसकों द्वारा अपनी श्रद्धांजलि देने के लिए पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में इसे लाया गया था, तब वहाँ, पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष, पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रंजीत धर, केंद्रीय कमेटी के सदस्य और पश्चिम बंगाल राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु, अन्य केंद्रीय समिति के सदस्य कॉमरेड शंकर साहा और कॉमरेड छाया मुखर्जी, स्टेट कमेटी के सदस्यों और विभिन्न जिला और क्षेत्रीय कमेटियों और अन्य जनप्रतिनिधियों ने उनकी मृत देह पर पुष्प अर्पित कर दिवंगत कॉमरेड को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद उनके पार्थिव शरीर को दक्षिण कोलकाता में क्योरातल्ला के श्मशान में अन्तिम संस्कार के लिए ले जाया गया।

कॉमरेड सलील चक्रवर्ती लाल सलाम!

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503